काय चिकित्सा–1

शोथ रोग का नैदानिक अध्ययन एवं दशमूल प्रयोग

अध्येता	:	डा. मदनलाल शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य प्रभुदत्त शर्मा
वर्ष	:	1974 ; 303

शोथ रोग का वैज्ञानिक अनुसंधान एवं परम्परागत रूप से प्रचलित शास्त्रीय योग दशमूल क्वाथ का प्रायोगिक अध्ययन करना ही प्रस्तुत महानिबन्ध का उद्देश्य बताया गया है ।

विस्तृत आतुरवृत्त पत्रक ही आतुर चयन का आधार है, 29 आतुरों का चयन कर 20 मि.लि. दशमूल क्वाथ का प्रयोग प्रातः, मध्यान्ह, सायं किया गया ।

वातिक शोथ में दशमूल क्वाथ का परिणाम 45 प्रतिशत रहा, दशमूल का मूत्रल प्रभाव चौथे दिन से ही देखा गया । विबन्ध, दौर्बल्य व रक्ताल्पता में दशमूल का कोई लाभ नहीं पाया गया । वातश्लैष्मिक शोथ में दीर्घकाल तक औषध दिया जाना अपेक्षित है ।

काय चिकित्सा–2

गुल्म रोग विवेचन

अध्येता	:	वैद्य बनवारी लाल गौड
निर्देशक	:	वैद्य रामकृष्ण ढ़ण्ढ़
वर्ष	:	1974 ; 272+3

गुल्म रोग का निदानात्मक,प्रतीकारात्मक एवं उभयात्मक अध्ययन हेतु अनुसंधान योजना की गई है ।

आतुर चयन का आधार आतुरवृत्त पत्रक तथा सुश्रुतोक्त षड्विध रोगी परीक्षा रही। कुल 8 रोगी चयनित कर प्रयोगार्थ हिंग्वादिवटी (चरक चि./5) 3–3 गोली दिन में 2 बार भोजनोत्तर कोष्ण जल से दी गई ।

अध्येता के अनुसार इन महानिबन्ध का उद्देश्य गुल्म रोग के सैद्धान्तिक पक्ष पर उपस्थित विवाद का समाधान रहा है । प्रयोग परिणाम दृष्ट्या 8 में से 6 रुग्णों में रोग के प्रत्यात्म लक्षणों में 50 प्रतिशत सुधार हुआ है ।

काय चिकित्सा–3

ग्रहणी रोग विवेचन

अध्येता	:	डा. श्रीकृष्ण शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामकृष्ण ढ़ण्ढ़
वर्ष	:	1974 ; 308+22

महारोग ग्रहणी में पर्पटी कल्प की चमत्कारिक जनश्रुतियों का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर 10 रुग्णों को चयनित कर पंचामृत पर्पटी को कल्प विधान से दधि, आम्र व दाड़िम कल्प के साथ निम्न क्रम से दिया गया –

प्रारम्भ में 2–2 रत्ती से प्रति 3 दिन बाद 1–1 रत्ती की मात्रा बढ़ाते हुए 31वें दिन 5–5 रत्ती की मात्रा से प्रतिदिन 1–1 रत्ती घटाते हुए 40 वें दिन पुनः 2–2 रत्ती की मात्रा दी गई । कुल मात्रा प्रति रोगी 35 ग्राम 40 दिन में प्रयोग की गई ।

3 गोली अपने कारणों से कल्प पूरा नहीं कर सके । 7 रोगियों में 1 से 3 कि. ग्राम तक भार वृद्धि के साथ 70 प्रतिशत तक ग्रहणी रोग के लक्षणों का उपशमन देखा गया ।

काय चिकित्सा–4

अम्लपित्त रोग विमर्श (विद्याधराभ्र प्रयोग)

अध्येता	:	डा. रामस्वरूप शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1974 ; 230

अम्लपित्त रोग के मनोदैहिक लक्षणों का विद्याधराभ्र (र.सा.सं.) से सुगम निवारण हेतु अध्ययन का विषय लिया गया ।

आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर 9 आतुरों का चयन कर विद्याधराभ्र 2–2 रत्ती दिन में 2 बार मधु एवं घृत के साथ समान मात्रा में 50 ग्राम मुनक्का के साथ प्रतिदिन दिया गया ।

औषधि सेवन के 7 दिन पश्चात् स्पष्ट लाभ होना प्रारम्भ हुआ, फिर भी 15 दिन से 90 दिन तक औषध सेवन कराया गया । जिससे 4 आतुरों को पूर्ण लाभ, 3 को सामान्य लाभ व 2 को लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–5

शिरः शूल का नैदानिक अध्ययन एवं पथ्यादि क्वाथ का परीक्षण

अध्येता	:	डा. महेन्द्र कुमार शाण्डिल्य
निर्देशक	:	वैद्य प्रभुदत्त शर्मा
वर्ष	:	1974 ; 421

अधिकांश रोगियों में स्वतन्त्र एवं परतंत्र भेद से स्थायी तनाव व व्याकुलता आदि कारणों से पायी जाने वाली सामान्य व्याधि शिरः शूल में एलोपैथी के समान वेदनाशामक औषधि आयुर्वेद में नहीं है, ऐसा प्रचारित है । इसी हेतु से इन दोनों क्षेत्रों में अध्ययन अध्येता को अभीष्ट रहा ।

अध्ययन की प्रक्रिया में आयुर्वेदीय रोगी रोग परीक्षा द्वारा तथा विशेषतः शिरः शूल लक्षण द्वारा 37 रोगी लिए गए (14 पुरुष, 22 महिलाऐं व 1 बालक) औषधि के रूप में पथ्यादि क्वाथ (शार्ङ्गधर) 5½ तोला क्वथित क्वाथ 1–1 तोला गुड़ मिलाकर दिन में 3 बार अधिकतम 10 दिन तक दिया गया ।

अधिकतम लाभ पित्तोल्वण शिरः शूल में 83 प्रतिशत रहा, वातोल्वण शिरः शूल में 71 प्रतिशत, सूर्यावर्त व अर्धावभेदक में 68–68 प्रतिशत लाभ रहा तथा कफोल्वण व वात कफोल्वण शिरः शूल में 50 प्रतिशत लाभ रहा ।

काय चिकित्सा–6

जलोदर का नैदानिक अध्ययन एवं इन्द्रवारूणी प्रयोग

अध्येता	:	डा. कनकप्रसाद व्यास
निर्देशक	:	वैद्य प्रभुदत्त शर्मा
वर्ष	:	1974 ; 304

जलोदर रोग की भयंकरता एवं राजस्थान में इन्द्रवारूणी की सुलभता को ध्यान में रखते हुए महानिबन्ध विषय का चयन किया गया ।

आतुरोपक्रमणीय विधि से 10 आतुरों का चयन किया गया । इन्द्रवारूणी (इन्द्रायण) का सुख विरेचनी वटी के रूप में 6 रत्ती से 3 माशा तक कोष्ण दुग्ध या जल के साथ आतुर प्रकृत्यनुसार प्रथम सप्ताह में लगातार 1 बार, द्वितीय सप्ताह में दो दिन के अन्तर से एक बार, तृतीय सप्ताह में प्रति सप्ताह 1 बार प्रयोग किया गया । प्रवाहण अधिक होने पर नागर चूर्ण 1 से 3 माशा दिया गया ।

इन्द्रवारुणी फल मज्जा द्वारा द्रव विरेचन होता है, किन्तु सुखविरेचनी वटी से द्रवबहुल मल विरेचन होता है । इससे यकृत व वृक्क के कार्य व्यवस्थित होते हैं । यह दीपन, पाचन अनुलोमन भी है, पथ्य व्यवस्था आवश्यक है ।

काय चिकित्सा–7

आमवात का निदान चिकित्सात्मक अध्ययन (गुग्गुलु प्रयोग)

अध्येता	:	डा. संतोष कुमार मिश्र
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1974 ; 282

आमवात बहुप्रचलित व्याधि है तथा गुग्गुलु इसके निवारण के लिए बहूपदिष्ट है। इसका विस्तृत प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

निदान पंचक तथा सुश्रुतोक्त रोगी रोग परीक्षा के आधार पर 13 आतुरों का चयन किया गया, प्रगति को लक्षणात्मक आधार से अंकित किया गया । अधीत आतुरों में शुद्ध गुग्गुलु का प्रयोग उष्ण जल से 2 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार किया गया। रात्रि में एरण्ड स्नेह 10 मि.लि. उष्ण दुग्धानुपान से दिया । गुग्गुलु की 21 दिन में 42 ग्राम न्यूनतम से लेकर 33 दिन में 192 ग्राम मात्रा अधिकतम तक दी गयी ।

7 दिन पश्चात् 13 में से 10 आतुरों को लाभ प्रारम्भ हुआ । 21 दिन बाद 10 को पूर्ण लाभ, 2 को अल्प लाभ व 1 को अलाभ रहा ।

काय चिकित्सा–8

उदावर्त रोग एवं सुकुमार कुमार घृत

अध्येता	:	डा. ओमप्रकाश शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामकृष्ण ढ़ण्ढ़
वर्ष	:	1975 ; 366

राजस्थान में वात प्रकोपक कारणों के बाहुल्य व उदावर्त के आधिक्य को दृष्टिगत रख कर घृत की विशेष कल्पना का प्रायोगिक अध्ययन ही विषय है ।

निर्धारित प्रपत्र द्वारा 20 आतुरों का चयन कर सुकुमार कुमार घृत (चक्रदत्त) 2 तोला भोजन से पूर्व दुग्धानुपान से 15 दिन तक दिया गया ।

6 आतुरों में त्रिवृद्ध हिंग्वादि वटी (अ.ह्र.) 6 माशा से 1 तोला की मात्रा में उष्ण जल से दिन में 2 बार 7 दिन तक दी गई ।

सुकुमार कुमार घृत से 85 प्रतिशत आतुरों में पूर्ण लाभ हुआ । त्रिवृद्ध हिंग्वादि वटी से 6 में से 5 आतुरों को पूर्ण लाभ हुआ ।

काय चिकित्सा–9

तमक श्वास का संशोधन चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. सुभाषचन्द शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य प्रभुदत्त शर्मा
वर्ष	:	1975 ; 330

श्वास रोग में औषधि प्रयोग पर्याप्त हुआ है, किन्तु संशोधन कार्मुकता का अध्ययन अभी नहीं हुआ है । इसी दृष्टिकोण से महानिबन्ध लिखा गया ।

आतुर पत्रक के आधार पर संशोधनार्ह एवं अनार्ह 10 रोगी चयनित कर स्नेहन स्वेदन, वमन एवं संसर्जन कर्म कराया गया ।

वमन हेतु मदनफल योग, वमनोपग–मधुयष्टि श्रृत दुग्ध या इक्षुरस प्रयोग तथा जल व सैंधव का प्रयोग कराया गया ।

स्नेहन से सभी रोगियों में अग्नि वृद्धि देखी गयी । स्वेदन से ग्रथित श्लेष्मा का पाक लक्षित हुआ ।

वमन से फुफ्फुसस्थ श्लेष्मा व कोष्ठस्थ श्लेष्मा का निष्कासन सभी रोगियों में देखा गया । जिससे रोग लक्षणों में उपशमन प्रतीत हुआ ।

काय चिकित्सा–10

परिणाम शूल (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन) एवं नारिकेल खण्ड

अध्येता	:	डा. रामगोपाल शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1975 ; 317

परिणाम शूल के रोगियों में सहज कल्पना नारिकेल खण्ड का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

आतुरोपक्रमणीय विधि से 6 आतुरों को चयनित कर नारिकेल खण्ड (चक्रदत्त) 1–1 तोला प्रातः सायं दुग्धानुपान से 35 से 74 दिन तक दिया गया ।

6 में से 4 रुग्णों में पूर्ण लाभ रहा तथा शेष 2 को अलाभ रहा ।

लाभालाभ का प्रतिशत व ज्ञानाधार अध्येता ने नहीं दिया है, साथ ही अध्ययन का निष्कर्ष व विमर्श भी नहीं दिया है ।

काय चिकित्सा–11

यकृदुदर और उसकी चिकित्सा

अध्येता	:	डा. भवानी सहाय शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामकृष्ण ढ़ण्ढ़
वर्ष	:	1975 ; 310+4

यकृदुदर के रोगियों पर यकृदरि लौह की कार्मुकता का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

निर्धारित आयुर्वेदीय आतुरोपक्रमणीय विधि द्वारा एक विशिष्ट आतुरवृत्त पत्रक बनाकर उसके आधार पर 20 रोगियों का चयन किया गया । 1–1 ग्राम यकृदरि लौह

दो बार शहद से तथा दुग्धानुपान 250 ग्राम से 1 कि.ग्रा. तक पथ्य के रूप में 47 दिन तक दिया गया ।

11 रोगियों को पूर्ण लाभ, 4 को सामान्य लाभ व 5 को अलाभ रहा ।

लाभालाभ का प्रतिशत व आधार अध्येता ने नहीं लिखा है ।

काय चिकित्सा–12

पक्षाघात रोग विमर्श–निदान चिकित्सात्मक अध्ययन (शतावर्यादि गुग्गुलु प्रयोग)

अध्येता	:	डा. रामस्वरूप गुप्ता
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1975 ; 356

पक्षाघात रोग का क्रमबद्ध चिकित्सात्मक ज्ञान करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है। आयुर्वेदीय परीक्षा विधि से 50 रोगी लिए गए जिन्हें शतावर्यादि गुग्गुलु (4–4 गोली) दिन में 3 बार कोष्ण जल से 50 दिन तक दी गई ।

36 रुग्णों में चेष्टा तथा संज्ञा में किंचित् किन्तु स्पष्ट सुधार दृष्टि गोचर हुआ।

14 रोगियों में कोई भी प्रगति परक लक्षण नहीं मिला । पूर्ण लाभ किसी भी रोगी में नहीं हुआ । औषधि सेवन और अधिक दीर्घकाल तक किया जाना अपेक्षित है ।

काय चिकित्सा–13

पाण्डु रोग विमर्श (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. जगदीश चन्द्र शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1975 ; 415

पाण्डु रोग की प्रामाणिक औषधि का अनुसंधान एवं रक्त मित्रार्क (सि.भै.म.मा.) का प्रायोगिक अध्ययन करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर 15 रोगी चयनित कर उन्हें रक्तमित्रार्क 10–10 मि.लि., प्रातः सायं द्विगुण जल से 25 दिन तक दिया गया ।

अधीत आतुरों में से 12 के लक्षणों में लाभ के साथ–साथ हीमोग्लोबिन (ग्राम प्रतिशत) में 0.17 ग्राम प्रतिशत से 0.25 ग्राम प्रतिशत तक की प्रति सप्ताह वृद्धि हुई ।

रक्त के अन्य परीक्षणों द्वारा भी रक्तमित्रार्क की कार्मुकता का अध्ययन किया जाना अपेक्षित है ।

काय चिकित्सा–14

गृध्रसी रोग का नैदानिक एवं चिकित्सात्मक अध्ययन (रसोन प्रयोग)

अध्येता	:	डा. लोकनाथ शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1975 ; 332

गृध्रसी रोग की बहुलता एवं सर्वसुलभ रसोन प्रयोग का वैज्ञानिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

आतुरोपक्रमणीय विधि से आतुरवृत्त पत्रक बनाकर 23 आतुरों का चयन किया गया । रसोन 6 तोला, हिंगु, जीरक, सैंधव, सौवर्चल तथा त्रिकटु प्रत्येक 1–1 माशा में प्रतिदिन रसोन पिण्ड बनाकर उसे 3 समान मात्राओं में सुबह, दोपहर, शाम अधिकतम 5 सप्ताह तक कोष्ण जल से दिया गया ।

रात्रि में विरेचनार्थ एरण्ड स्नेह 10 मि.लि. उष्ण दुग्ध से दिया ।

23 में से 15 आतुरों को पूर्ण लाभ रहा, 7 को मध्यम लाभ व 1 को कोई लाभ नहीं हुआ। लाभालाभ का ज्ञानाधार लक्षणोपशमन रहा ।

काय चिकित्सा–15

रक्तपित्त और इसके चिकित्सा सिद्धान्त

अध्येता	:	डा. दुर्गादेवी मिश्रा
निर्देशक	:	वैद्य मदनकुमार शास्त्री
वर्ष	:	1975 ; 257

रक्तपित्त का निदानपूर्वक चिकित्सा सिद्धांतों का आर्ष संकलन कर एक आतुरवृत्त पत्रक बनाया गया जिसके आधार पर 17 आतुरों को चयन कर उन्हें सामान्य प्रयोग के लिए दिन में 3 बार सुबह, दोपहर, शाम 30–30 मि.लि. आमलकी स्वरस (मिश्री अथवा चीनी मिलाकर) सेवन कराया गया ।

रक्त प्रवर्तन दृष्ट्या 17 में से 16 आतुरों में अपेक्षित लाभ हुआ । लाभालाभ का स्पष्ट आधार अध्येत्री ने प्रस्तुत नहीं किया है ।

काय चिकित्सा–16

शोथ रोग एवं पुनर्नवाष्टक प्रयोग

अध्येता	:	डा. सोमेश्वर भारद्वाज
निर्देशक	:	वैद्य मदनकुमार शास्त्री
वर्ष	:	1976 ; 270

रोग का क्रमबद्ध वैज्ञानिक ज्ञान एवं चिकित्सात्मक परिणाम निदर्शन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

विस्तृत आर्ष संकलन के अनुसार विशिष्ट आतुरवृत्त पत्रक द्वारा 30 शोथ रोगियों का चयन किया गया ।

पुनर्नवाष्टक क्वाथ (भा.प्र.) 20–20 मि.लि. दिन में 3 बार 1–1 मि.लि. गोमूत्र मिलाकर, 25 दिन तक दिया गया ।

7 को शोथ में पूर्ण लाभ, 7 को सामान्य लाभ तथा 6 को अलाभ रहा ।

काय चिकित्सा–17

कास रोग विमर्श (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. शिवदयाल वशिष्ठ
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1976 ; 269

कास रोग के निदान चिकित्सात्मक अध्ययन एवं कण्टकार्यवलेह का प्रायोगिक ज्ञान ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरोपक्रमणीय विधि से तथा एक्सरे परीक्षा से (राजयक्ष्मा सापेक्ष निदान हेतु) निर्णीत कर 30 रुग्णों को चयनित कर कण्टकार्यवलेह (भा.प्र.) 10–10 ग्राम सुबह, शाम 2 मात्राओं में दिया गया ।

30 रुग्णों में से कास के प्रत्यात्म लक्षणों का उपशमन 19 रुग्णों में देखा गया । 7 रुग्णों को उक्त लक्षणों में सामान्य लाभ व 4 को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–18

अतिसार रोग विमर्श एवं अतीस प्रयोग

अध्येता	:	डा. हनुमान सहाय शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1976 ; 216

ग्रामीण क्षेत्रों में अतिसार की महाव्यापद् एवं आशुकारित्व की स्थिति में सर्वसुलभ एवं शीघ्रलाभकारिता का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

आतुरोपक्रमणीय विधि से विस्तृत इतिवृत्त पूर्वक व मुख्यतः प्रश्नाधारित आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर 50 आतुरों का चयन किया गया ।

अतिविषा चूर्ण (भा.प्र.) 3–3 ग्राम दिन में 3 बार जल से 3 से 7 दिन तक प्रयोग किया गया ।

मुख्य लक्षण द्रवमल की बारम्बार प्रवृत्ति में 29 रुग्णों को पूर्ण लाभ, 6 को अल्पलाभ व 15 को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–19

वातरक्त विमर्श एवं कैशोर गुग्गुलु प्रयोग

अध्येता	:	डा. मातृदत्त शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य मदनकुमार शास्त्री
वर्ष	:	1976 ; 222

कृच्छ्रसाध्य वातरक्त व्याधि में आप्तोपदिष्ट कैशोर गुग्गुलु का प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का मुख्य उद्देश्य है ।

आतुरोपक्रमणीय विधि से निर्मित प्रपत्र द्वारा 15 वातरक्त रुग्णों का चयन कर कैशोर गुग्गुलु (चक्रदत्त) का 2–2 ग्राम प्रातः, मध्यान्ह, सायं तीन मात्राओं में 70 दिन तक प्रयोग किया गया ।

10 रुग्णों में पूर्ण लाभ, 3 में आंशिक लाभ तथा 2 रुग्णों में कोई लाभ नहीं हुआ, अध्येता ने लाभालाभ ज्ञान हेतु कोई स्पष्ट प्रक्रिया नहीं बताई ।

काय चिकित्सा–20

मूत्रविष संचार में मूत्र विरेचनीय एवं विरजनीय द्रव्य प्रयोग

अध्येता	:	डा. रमेशचन्द्र शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य मदनकुमार शास्त्री
वर्ष	:	1976 ; 448

मूत्रविषसंचार (यूरिमिया–UREMIA) पर मूत्र विरेचनीय एवं विरजनीय द्रव्यों के प्रयोग का विशद वैज्ञानिक अध्ययन, इस कारण से महानिबन्ध का उद्देश्य है कि नव्य चिकित्सा विज्ञानोक्त व्याधि चरकोक्त गण की औषधियों का प्रभाव परिज्ञात करना है ।

आधुनिक रक्त रसायन परीक्षणों के आधार पर 13 रोगियों का चयन सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर में किया गया ।

मूत्रविरेचनीय एवं विरजनीय (चरक) गण की औषधियों का संयुक्त क्वाथ 25 मि.लि. क्वथित रूप में दिन में तीन बार दिया गया, सुख विरेचनार्थ एरण्डस्नेह 20 मि. लि. दुग्ध से रात्रि में दिया गया ।

37 प्रतिशत रोगियों के रक्तगत यूरिया (Blood urea) में आशाजनक कमी देखी गयी । शेष लक्षणों में भी अपेक्षित सुधार हुआ या नहीं, यह अध्येता ने नहीं लिखा है ।

काय चिकित्सा–21

प्रवाहिका रोग एवं चतुर्बीज प्रयोग

अध्येता	:	डा. हरिप्रसाद शर्मा ''ढ़ण्ढ़''
निर्देशक	:	वैद्य प्रभुदत्त शर्मा
वर्ष	:	1976 ; 226

प्रवाहिका महानगरीय एवं उपनगरीय जानपदिक व्यापद् के रूप में प्रसिद्ध है, इसका सर्व सुलभ निवारण आयुर्वेद में अन्विष्ट करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है। चतुर्बीज के सर्वसामान्य प्रयोग की कार्मुकता का अध्ययन अभीष्ट है ।

चरक विमान स्थान में उपदिष्ट दशविध रोगी एवं रोग परीक्षा के आधार पर अनुसंधान योजना बनाकर, कुल 20 रोगी चयनित कर, चतुर्बीज (मेथी, चन्द्रशूर, कालाजाजी, यवानी) का संयुक्त चूर्ण 4–4 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार उष्णोदक से प्रयुक्त किया गया ।

सुखविरेचनार्थ एरण्डतैल 10 मि.लि. दूध से रात्रि में दिया गया ।

20 में से 15 रोगियों में प्रवाहण, मल प्रवृत्ति, संहति, आवृत्ति में पूर्ण लाभ रहा ।

काय चिकित्सा–22

आमवात एवं शुण्ठी (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. गोपाललाल पारीक
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1976 ; 254

आमवात व्याधि में सर्वसुलभ एकौषध प्रयोग शुण्ठी की कार्मुकता का अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरोपक्रमणीय विधि से विस्तृत इतिवृत्त द्वारा 20 रोगी चयनित कर शुण्ठी चूर्ण 3–3 ग्राम को 500 मि.लि. दूध में उबालकर (श्रृतकर) दुग्धश्रृत शुण्ठी का प्रयोग दिन में 2 बार 60 दिन तक किया गया ।

20 में से 12 रोगियों को शूल, शोथ में सामान्य लाभ हुआ, 6 को अल्पलाभ व 2 रोगियों को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–23

विषम ज्वर रोग विमर्श एवं करंज प्रयोग

अध्येता	:	डा. मन्नालाल शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1976 ; 247

विषम ज्वर एक राष्ट्रीय समस्या है । आयुर्वेद का इसके उन्मूलन में योगदान करने की दिशा में प्रयास किया गया है । शास्त्रोक्त फलश्रुतियों के आधार पर करंज (Caesalpinia crista) का प्रयोग परिणाम आकलन ही महानिबंध का उद्देश्य है। रोगेतिवृत्त तथा रक्तगत मलेरिया परजीवी (Malarial Parasite) की उपस्थिति को आधार मानकर कुल 50 आतुरों (28 पुरुष, 14 स्त्री, 8 बालक) को लिया गया। इन्हें

करंज फल मज्जा का 3–3 ग्राम चूर्ण प्रातः, मध्यान्ह, सायं उष्णोदक से दिया गया । अधिकतम औषध प्रयोग 20 दिन, न्यूनतम 7 दिन तक किया गया ।

पथ्य व्यवस्था 500 ग्राम दूध दिन में 2 बार, मुनक्का 50 ग्राम 1 बार दिया गया।

36 रोगियों में पूर्ण लाभ, 9 रोगियों में अल्प लाभ तथा 5 रोगियों में कोई लाभ नहीं रहा।

काय चिकित्सा–24

मधुमेह (नैदानिक अध्ययन ; शिलाजतु प्रयोग)

अध्येता	:	डा. राजनारायण शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य प्रभुदत्त शर्मा
वर्ष	:	1976 ; 220

मधुमेह पर शिलाजतु की फलश्रुतियों का प्रायोगिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

रक्तगत एवं मूत्रगत शर्करा तथा उपरुग्णात्मक अध्ययन के आधार पर 25 रोगियों का चयन किया गया । इन्हें शुद्ध शिलाजतु की 5–5 ग्राम की दो मात्रा शर्करारहित दुग्ध से 75 दिन तक दी गयी ।

प्रयोग के परिणामस्वरूप रोगियों के शरीर भार में औसत 0.5 कि.ग्रा. से 1.2 कि. ग्रा. की वृद्धि होने के बावजूद, मूत्रशर्करा में ++++ से + तक कमी परिलक्षित हुई। रक्तशर्करा अधिकतम 375 मि.ग्रा. प्रतिशत थी जिसमें अधिकतम कमी 130 मि.ग्रा. प्रतिशत तक रही । रोग लक्षणों में भी 60 प्रतिशत लाभ हुआ । इस बात की अधिक सम्भावना है कि वर्ष भर (365 दिन तक) शिलाजतु की उक्त मात्रा सेवन करने पर सर्वथा रोग मुक्ति हो सकती है ।

काय चिकित्सा–25

अर्शोरोग विमर्श (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. सीताराम शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य मदनकुमार शास्त्री
वर्ष	:	1976 ; 205

कष्टप्रद किन्तु रोग निदान में सहज प्रत्यक्ष युक्त व्याधि को ग्रामीण क्षेत्रों में सुगम उन्मूलनार्थ चित्रक तक्र का सर्वसामान्य प्रयोग ही वैज्ञानिक अध्ययन का विषय है।

प्रत्यक्षतः अर्श निदान तथा आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर 20 आतुरों का चयन कर चित्रकमूल त्वक् चूर्ण 2 ग्राम तथा दधि 500 मि.लि. को शास्त्रोक्त विधि से तक्र कल्पना कर प्रातःकाल एक समय खाली पेट 2 माह तक प्रयुक्त कराया गया ।

65% आतुरों को अर्श क्षरण, वेदना शमन, रक्त प्रवर्तन न होना एवं कण्डू रहित होना पाया गया । 20% को अर्श क्षरण नहीं हुआ, अन्य लक्षणोपशमन हुआ । 15% आतुरों में कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–26

आंत्रिक ज्वर पर लक्ष्मीनारायण रस (नैदानिक प्रयोगात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. रमेशकुमार शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य प्रभुदत्त शर्मा
वर्ष	:	1977 ; 237

आन्त्रिक ज्वर में निरापद शास्त्रीय योग का प्रयोगात्मक अध्ययन ही इस महानिबंध का उद्देश्य है ।

उपरुग्णात्मक विधि से आंत्रिक ज्वर के 21 आतुरों का चयन कर लक्ष्मीनारायण रस (रस चण्डांशु) 8 रत्ती की मात्रा में 4–4 घंटे के अन्तर से दिन रात में 6 बार उष्णोदक से प्रयोग कराया गया ।

सभी 21 आतुरों में प्रथम सप्ताह में ज्वर, विबंध तथा मुक्ता सदृश पिड़िकायें थी।

द्वितीय सप्ताह में प्रवृद्ध ज्वर, अरति, दौर्बल्य, उदरशूल तथा प्लीहाभिवृद्धि लक्षण पाये गये । तृतीय सप्ताह में 68 प्रतिशत आतुर ज्वर मुक्त एवं विगत लक्षण हुये, किन्तु 20 प्रतिशत आतुरों में केवल ज्वर मोक्षण मात्र हुआ तथा शेष 12 प्रतिशत आतुरों में कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–27

क्रिमि रोग का नैदानिक एवं चिकित्सात्मक अध्ययन (राजिका प्रयोग)

अध्येता	:	डा. हरिशंकर शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1977 ; 232

महानगरीय जल संसाधन व्यवस्था से व्यापक रूप से उत्पन्न क्रिमि रोग में घरेलू औषध राजिका का प्रायोगिक अध्ययन करना ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

उपरुग्णात्मक, प्रयोगशालात्मक तथा साहित्यिक आधारों पर विस्तृत रोग निदान प्रक्रिया द्वारा 32 आतुरों का चयन कर राजिका का प्रयोग 4–4 ग्राम सुबह, शाम एवं दोपहर शर्बत दीनार 20 मि.लि. तथा समजल से 21 दिन तक किया गया ।

24 आतुरों में पुरीष परीक्षण में क्रिमि के अण्डे व पुटी देखे गये तथा अग्निमांद्य, उदरगौरव आदि लक्षणों में भी लाभ हुआ ।

8 रुग्णों में कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–28

जीर्ण प्रतिश्याय पर चित्रक हरीतकी का प्रयोग

अध्येता	:	डा. महावीर प्रसाद खाण्डल
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1977 ; 206

प्रतिश्याय जैसे सामान्य रोग में भी निश्चित चिकित्सा के अभाव से जीर्ण प्रतिश्याय की सोपद्रवावस्था बनती है, जिसमें त्रिदोषघ्न, अग्निमूलक एवं सुलभ रसायन चित्रक हरीतकी का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

लक्षणात्मक इतिवृत्त ही आतुर चयन का मुख्य आधार रहा । 69 बहिरंग एवं 9 अंतरंग रोगी (कुल 78 रोगी) लिये गये । चित्रक हरीतकी (चक्रदत्त) योग को 20–20 ग्राम (बालकों को 5–5 ग्राम) प्रातः सायं दुग्धानुपान के साथ लघ्वन्न पथ्य के साथ 30 दिन तक प्रयुक्त की गई ।

78 में से 67 रोगियों को शिरः शूल लक्षण में शत प्रतिशत लाभ के साथ जीर्ण प्रतिश्याय लक्षण में भी पूर्ण लाभ हुआ । योग के अतिसेवन से पित्तवृद्धि के लक्षण मिलते हैं ।

काय चिकित्सा–29

वात श्लैष्मिक ज्वर

अध्येता	:	डा. बालकृष्ण गोस्वामी
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1977 ; 216

वात श्लैष्मिक ज्वर के जनपदोध्वंसात्मक स्वरूप पर रसमाणिक्य की कार्मुकता का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरोपक्रमणीय विधि से आतुरवृत्त पत्रक निर्मित कर 32 रोगियों का चयन किया गया।

रसमाणिक्य (रस.त.) 2–2 रत्ती, आरग्वधादि क्वाथ 10–10 मि.लि. प्रातः, मध्यान्ह एवं सायंकाल 3 बार प्रयुक्त किया गया । साथ में प्रतिदिन 50 ग्राम मुनक्का दी गयी। अधिकतम प्रयोग अवधि 35 दिन रही ।

ज्वर मोक्ष सहित अन्य लक्षणों में 21 आतुरों को पूर्ण लाभ हुआ, 5 को आंशिक लाभ तथा 6 को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–30

वात श्लैष्मिक ज्वर तथा रत्नगिरि रस (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. गीता मिश्रा (शर्मा)
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1978 ; 221

वात श्लैष्मिक ज्वर पर निश्चित कार्मुकता परक औषधि का अनुसंधान ही इस महानिबंध का उद्‌देश्य है ।

उपरुग्णात्मक एवं प्रयोगशालीय परीक्षण द्वारा 27 आतुरों का चयन कर रत्नगिरि रस (भै.र.ज्वर रोगाधिकार) 3–3 रत्ती प्रातः, मध्यान्ह एवं सायंकाल दिन में 3 बार मधु से दिया गया । साथ में कोष्ण दुग्ध 500 मि.लि. दिया गया ।

लाक्षणिक आधारों पर निर्मित प्रगति पत्रक के अनुसार 27 में से 21 आतुरों को पूर्ण लाभ, 4 को अलाभ रहा शेष 2 आतुरों ने चिकित्सा बीच में ही छोड़ दी ।

काय चिकित्सा–31

पैत्तिक ज्वर में तिक्तषट्पल घृत प्रयोग

अध्येता	:	डा. श्रीकृष्ण शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामदयालु शर्मा
वर्ष	:	1979 ; 164

औषधि सेवन के क्रम विपर्यय, चिकित्सा व्यापद् और वर्तमान ज्वरोत्तर पथ्य व्यवस्था के कारण उत्पन्न वृद्ध निर्द्रव पित्त से रूक्षोष्मा जनित ज्वर विशेष में दशाह पूर्व तिक्तषट्पल घृत प्रयोग से चक्रपाणिदत्त के चरक टीका ''तेनानूर्ध्वगे पित्तेदेयमेव सर्पि'' सिद्धान्त का उपोद्बलन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

निदान पंचक सहित आतुरोपक्रमणीय विधि से ज्वर सामान्य एवं पैत्तिक ज्वर विशेष के प्रपत्र निर्मित कर 30 रोगी (15 अंतरंग, 15 बहिरंग) लिये गये । इन्हें तिक्तषट्पल घृत (चरक, कुष्ठ चिकित्सा) 20–20 ग्राम कोष्ण दुग्ध के साथ दिन में 2 से 4 बार की मात्रा में दिया गया । साथ में संसर्जन विधि के अनुसार पथ्य पर रखा गया।

66.66 प्रतिशत रोगियों में विज्वरत्व के साथ–साथ लक्षणोपशमन हुआ । योग के रोगहरत्व की परीक्षा का निश्चित मापदण्ड सम्प्राप्ति विघटनात्मक होना चाहिये ।

काय चिकित्सा–32

प्रवाहिका तथा बृहज्जीरकादि मोदक (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. विनोद कुमार गोठेचा
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1979 ; 227

जयपुर क्षेत्र में प्रवाहिका रोग व्यापक रूप में पाया जाता है । शास्त्रोपदिष्ट बृहज्जीरकादि मोदक (भै.र.) रुचिकर, सुलभ एवं अल्प व्यय साध्य होने से अध्ययन हेतु विषय चयन किया गया ।

आतुरवृत्त पत्रक में मुख्यतः प्रवाहण एवं पुरीष प्रवृत्ति, आवृत्ति, संहति एवं सशूल प्रवृत्ति को लाक्षणिक रोग निदान आधार माना गया ।

25 आतुर (18 पुरुष, 7 महिला) अध्ययन हेतु अधीत किये गये ।

बृहज्जीरकादि मोदक को 5–5 ग्राम मात्रा में दिन में 3 बार दिया गया । साथ में पथ्य रूप में चावल मूंग की कृशरा तथा दधि का प्रयोग कराया गया ।

60 प्रतिशत आतुरों में पूर्ण लाभ, 20 प्रतिशत में अल्पलाभ तथा 20 प्रतिशत में कोई लाभ नहीं हुआ ।

बलवर्ण उपचय, विगुण वातानुलोमन, शूलशमन, पुरीष में रक्त का अभाव, ज्वरशमन तथा अग्निवृद्धि कर प्रभाव औषध का देखा गया ।

काय चिकित्सा–33

परिणाम शूल एवं सामुद्रादि चूर्ण (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. दयाशंकर मिश्रा
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1979 ; 206

परिणाम शूल का वैज्ञानिक अन्वेषणात्मक अध्ययन एवं परम्परागत रूप से प्रचलित सामुद्रादि चूर्ण का प्रायोगिक अध्ययन करना ही प्रस्तुत महानिबंध का उद्देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार 20 रोगियों का चयन कर उन्हें सामुद्रादि चूर्ण (भै.र.) 2–2 ग्राम की मात्रा में दिन में 2 बार उष्णोदक अनुपान से 10 से 20 दिनों तक दिया गया। विबन्ध की स्थिति में निशोथ चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा रात्रि सोते समय दी गयी ।

2 दिन पश्चात् ही रोगोपशम प्रारम्भ हो गया 80 प्रतिशत रोगियों को पूर्ण लाभ, 10 प्रतिशत को सामान्य लाभ तथा 10 प्रतिशत को लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–34

पाण्डु रोग एवं वज्रवटक मण्डूर (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. राममोहन त्यागी
निर्देशक	:	वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा
वर्ष	:	1980 ; 178

पाण्डु रोग में वज्रवटक मण्डूर का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध विषय चयन का विशेष हेतु है।

त्रिविध, पंचविध, षड्विध, अष्टविध एवं दशविध रोगी रोग परीक्षा द्वारा विस्तृत आतुरवृत्त पत्रक ही रोग निदान का आधार रहा । अध्येता ने रक्त के प्रयोगशालीय परीक्षणों का अध्ययन में उपयोग नहीं किया ।

कुल 25 आतुर चयनित किये गये, जिनमें 1–1 ग्राम वज्रवटक मण्डूर की तीन मात्रा प्रतिदिन दी गयी। प्रयोग अवधि 30 दिन तक रही ।

औषध से 88 प्रतिशत रोगियों में लाभ रहा । इसके लिए निश्चित एवं स्पष्ट आधार अध्येता ने नहीं बताया है ।

काय चिकित्सा–35

अर्शो रोग पर दुर्नामान्तक शतमल्ल योग का बाह्य चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. महेन्द्र कुमार श्रृंगी
निर्देशक	:	वैद्य प्रभुदत्त शर्मा
वर्ष	:	1980 ; 207

अर्श रोग पर शस्त्र कर्म की अपेक्षा औषध प्रयोग सुख साध्य है, अतः इसका चिकित्सात्मक अध्ययन बाह्य प्रयोग द्वारा किया जाना ही अध्ययन का उद्देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रक के अनुसार तथा सामान्य शल्यकर्म की पूर्व व्यवस्था के पश्चात् 40 रोगियों को चयनित कर दुर्नामान्तक शतमल्ल योग (कल्पित) का गौ घृत के साथ अर्श पर बाह्य प्रलेप किया गया । प्रातः सायं ब्राह्म रसायन 20 ग्राम, अभयारिष्ट 20 मि.लि. तथा हरीतकी चूर्ण 3 ग्राम उष्णोदक से दिया गया ।

दाह अधिक होने पर गौघृत लेप, चन्दन लेप लगाया गया । रक्तस्राव अधिक होने पर कहरवा पिष्टी 250 मि.ग्रा. दी गयी ।

65 प्रतिशत रोगियों ने चिकित्सा बीच में छोड़ दी (इसके कारणों का उल्लेख अध्येता ने नहीं किया है)। शेष 35 प्रतिशत रोगियों में प्रथम सप्ताह में कोई लाभ नहीं हुआ । द्वितीय सप्ताह में 15 प्रतिशत रोगी स्वस्थ हुये । तृतीय सप्ताह में सभी (शेष 20 प्रतिशत) 20 रोगियों में अर्शान्कुर नष्ट होकर स्वास्थ्य लाभ हुआ ।

काय चिकित्सा–36

जलोदर चिकित्सा में बिन्दुघृत की कार्मुकता

अध्येता	:	डा. चन्दनमल जैन
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1980 ; 181

कृच्छ्रसाध्य जलोदर रोग में स्वल्प औषध प्रयोग का प्रयोगात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार 20 रोगियों में 4 से 40 बूंद तक बिन्दुघृत (चक्रदत्त) प्रातः सायं दो बार पुनर्नवादि क्वाथ की सामान्य क्वाथ मात्रा के साथ 2 माह तक दिया गया।

2 रोगियों को पूर्ण लाभ, 7 को सामान्य लाभ व 6 को अलाभ हुआ । लाभालाभ परिज्ञान हेतु लाक्षणिक आधार प्रयुक्त किया गया, किन्तु पूर्णलाभ, अल्पलाभ व अलाभ के लिए स्पष्ट मानक अध्येता ने नहीं दिये हैं । शेष 5 रोगियों ने चिकित्सा बीच में छोड़ दी, जिसका कारण भी स्पष्ट वर्णित नहीं है ।

काय चिकित्सा–37

आमवात में कंस हरीतकी की कार्मुकता

अध्येता : डा. अरुण कुमार

निर्देशक : वैद्य रामप्रकाश स्वामी

वर्ष : 1981 ; 157

आमवात के शास्त्रीय पक्ष का ज्ञान एवं कंसहरीतकी के प्रयोगात्मक अध्ययन हेतु ही महानिबन्ध का विषय चयनित किया गया ।

त्रिविध, दशविध तथा अष्टविध परीक्षाओं में से नाड़ी, मल, मूत्र एवं हृदय की विशेष परीक्षायें ही रोग निदान का आधार रही ।

20 रोगी अध्ययनार्थ चयनित किये गये । कंसहरीतकी (च.चि.) 20–20 ग्राम सुबह शाम दो बार रास्नासप्तक क्वाथ 20–20 मि.लि. के साथ दी गयी ।

आमवात के जीर्ण रोगियों में 16 में से 7 रोगियों को पूर्ण लाभ, 5 को सामान्य लाभ तथा 4 रोगियों को लाभ नहीं हुआ ।

नवीन रोगी 4 थे, जिनमें से 1 को लाभ हुआ, शेष को नहीं । अधिक शोथ की अवस्था में पुनर्नवादि क्वाथ 20–20 मि.लि. भी दिया गया ।

काय चिकित्सा–38

कामला रोग पर पित्त प्रमाथि हिम (चिकित्सकीय अध्ययन)

अध्येता : डा. दीपचन्द कंसल

निर्देशक : वैद्य रामप्रकाश स्वामी

वर्ष : 1981 ; 188

कामला रोग के व्यापक रूप में सर्वसुलभ पित्त प्रमाथि हिम का चिकित्सात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आयुर्वेदीय रोगी रोग परीक्षा तथा विभिन्न प्रकार की आधुनिक प्रयोगशालीय रक्त परीक्षणों के आधार पर कुल 28 आतुर चयनित किये गये। जिनमें पित्त प्रमाथि हिम (सि.भै.म.मा.) प्रातः सायं 50 मि.लि. की 2 मात्रा 2 से 7 सप्ताह तक दी गयी । सांत्वना के रूप में 2X250 मि.ग्रा. ग्लूकोज कैप्सूल भी दिये गये ।

28 में 12 आतुरों को पूर्ण लाभ, 2 को सामान्य लाभ तथा 14 को लाभ नहीं रहा।

काय चिकित्सा–39

तमक श्वास एवं हरिद्रा खण्ड (चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. विनोद कुमार त्रिपाठी
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 157

तमक श्वास की सद्यः प्रभावी प्रमाणिक औषधि का अनुसंधान ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार 50 आतुरों का चयन कर दो वर्ग बनाये गये, प्रथम वर्ग में 40 आतुरों को हरिद्राखण्ड 3 ग्राम उष्णोदक से दिन में 3 बार 4 सप्ताह तक दिया गया। द्वितीय वर्ग में 10 आतुरों को रिक्त कैप्सूल प्लेसिबो के रूप में दिन में 2–2 एक सप्ताह तक दिये गये ।

प्रथम वर्ग में 62.5 प्रतिशत आतुरों को लाभ रहा, जबकि द्वितीय वर्ग में किसी आतुर को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–40

वातिक उन्माद में उन्माद भंजन रस की कार्मुकता

अध्येता	:	डा. अजयकुमार साहु
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
सह–निर्देशक	:	डा. शिव गौतम
वर्ष	:	1981 ; 230

मनोरोगों में आयुर्वेद चिकित्सा के अभाव को प्रभावी औषधि अन्वेषण से दूर किया जाना ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आयुर्वेदोक्त वातोन्माद लक्षणों के आधार पर मानसिक रोग विभाग सवाई मानसिंह चिकित्सालय, जयपुर में ई.सी.टी. व इन्सुलिन प्रयोग रहित 30 रोगियों का चयन किया गया ।

उन्माद भंजन रस (भै.र.) 500 मि.ग्रा. 2 बार शीतल जल से दिया गया ।

दूसरे 20 रोगियों में 500 मि.ग्रा. ग्लूकोज कैप्सूल प्लेसिबो दिया गया ।

नैदानिक परीक्षणों का आधार साइकोमीट्रीक सेम्पल रेटिंग स्केल रहा ।

73 प्रतिशत रोगियों में औषध प्रयोग से लक्षण हीनता देखी गयी । जबकि 13 प्रतिशत में मध्य लाभ, लेकिन 15 प्रतिशत आतुरों में ग्लूकोज कैप्सूल से भी लाभ देखा गया।

काय चिकित्सा–41

ब्राह्म रसायन का वातातपिक अध्ययन

अध्येता	:	डा. गणेश उपाध्याय
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 284+20

ब्राह्म रसायन का वातातपिक विधि से प्रयोग परिणाम ज्ञान ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

रसायन योग्य, अयोग्य विवेचन पूर्वक यदृच्छा निदर्शन विधि से कुल 37 रोगियों का चयन कर 3 वर्ग बनाये गये ।

''क'' वर्ग में विशिष्ट संशोधन (स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन, नस्य कर्म एवं संसर्जन विधि) पूर्वक 6 रोगियों को ब्राह्म रसायन दिया गया ।

''ख'' वर्ग में मात्र स्नेहन, स्वेदन तथा हरीतक्यादि चूर्ण प्रयोग कराकर 21 रोगियों को ब्राह्म रसायन दिया गया ।

''ग'' वर्ग में मात्र हरीतक्यादि चूर्ण देकर ब्राह्म रसायन 10 रोगियों में दिया गया। ब्राह्म रसायन की कुल मात्रा प्रत्येक रोगी में 400 ग्राम 8 दिन में रही । कुल प्रयोग अवधि 7 सप्ताह रही ।

''क'' वर्ग में रसायन के 13 गुणों में 6 गुणों की प्राप्ति हुई, ''ख'' वर्ग में 4 गुणोपलब्धि तथा ''ग'' वर्ग में 2 गुण आतुरों में पाये गये ।

काय चिकित्सा–42

तमक श्वास में भार्ङ्गीगुड़ की कार्मुकता

अध्येता	:	डा. चन्द्रभानु शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 169

तमक श्वास की बहुलता में प्रभावी औषध एवं सुख कर प्रयोग का अनुसंधान ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक ही रोगी चयन का आधार रहा । 20 रोगी एतदर्थ चयनित कर भार्ङ्गी गुड़ (चक्रदत्त) 20–20 ग्राम दिन में 4 बार प्राशन हेतु 21 दिन तक दिया गया । अनुपान रूप में सुखोष्ण जल दिया गया ।

6 आतुरों को लाभालाभ निर्देशक सारणी के अनुसार पूर्ण लाभ हुआ । 6 को मध्यम लाभ तथा 8 को लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–43

मधुमेह एवं स्वर्ण बंग (निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. रामकिशोर पारीक
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 154

मधुमेह रोग का चिकित्सात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इतिवृत्तानुसार, मूत्रगत व रक्तगत शर्करा परिमापन रोगी चयन का आधार रहा। 14 रोगियों का चयन कर स्वर्ण बंग (भै.र.) 3–3 रत्ती दो बार मधु से 35 दिन तक दिया गया ।

स्वर्ण बंग प्रयोग में यद्यपि रक्तगत एवं मूत्रगत शर्करा में अपेक्षित लाभ नहीं हुआ, किन्तु लक्षणात्मक आधार पर सभी रोगियों में 50 प्रतिशत लाभ परिलक्षित हुआ।

काय चिकित्सा–44

गृध्रसी का निदान चिकित्सात्मक अध्ययन (एरण्ड पाक प्रयोग)

अध्येता	:	डा. राममणि शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 162

गृध्रसी रोग का क्रमिक निदान चिकित्सात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है। स्फिग्पूर्वा से जंघापदम् तक होने वाली स्तंभ, रुक्, तोद, एवं स्पन्दन लक्षण युक्त व्याधि ही रोगी चयन का आधार रहा । 36 रोगी चयनित कर एरण्डपाक (वृ.नि.र.) 20–20 ग्राम सुबह–शाम मन्दोष्ण दुग्ध से 4 सप्ताह तक प्रयोग किया गया ।

13 रोगियों में 43.3 प्रतिशत लक्षणों में कमी रही, 7 रोगियों में 23.4 प्रतिशत लक्षणों में तथा 6 रोगियों में 20 प्रतिशत लक्षणों में कमी परिलक्षित हुयी ।

काय चिकित्सा–45

गण्डूपद क्रिमि पर क्रिमिरिपु वटी की कार्मुकता (चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. श्यामसुन्दर शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 175

क्रिमि दोष की महानगरीय जलापूर्ति के कारण प्रभूत वृद्धि में प्रभावी आयुर्वेदीय औषध का अनुसंधान ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

इतिवृत्त एवं पुरीष परीक्षा के आधार पर 20 रोगियों का चयन कर क्रिमिरिपु वटी 4–6 गोली उष्णोदक से प्रातः सायं 3 सप्ताह तक प्रयोग करायी गयी ।

20 में से 14 रोगियों में 1 से 5 तक की संख्या में वयस्क गण्डूपद क्रिमि का मलमार्ग से निस्सरण हुआ । 6 रोगियों में अपकर्षण नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–46

अम्लपित्त में अविपत्तिकर चूर्ण की कार्मुकता

अध्येता	:	डा. डी.जी. सोनवाने
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 183

अम्लपित्त में अविपत्तिकर चूर्ण की कार्मुकता का वैज्ञानिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक द्वारा 20 आतुरों का चयन कर इन्हें अविपत्तिकर चूर्ण 3–3 ग्राम दिन में 3 बार जल से 3 सप्ताह तक दिया गया ।

10 नवीन आतुरों में 7 को पूर्ण लाभ, 2 को सामान्य लाभ रहा तथा एक को अलाभ रहा।

चिरोत्थित अम्लपित्त के 10 रोगियों में 3 को लाभ, 3 को सामान्य लाभ व 4 को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–47

शोथ (निज) में कंस हरीतकी का प्रयोग (निदान चिकित्सात्मक एवं प्रयोगशालात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. रतनपाल सिंह चौहान
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 181

निज स्वरूप के शोथ पर कंसहरीतकी (च.चि./12) की कामुर्कता तथा शोथ निवारण की क्षमता एवं सीमा का निर्धारण ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त के अनुसार 20 रोगियों का चयन कर 40 ग्राम प्रतिदिन 2 मात्रा में विभक्त कर कंसहरीतकी का प्रयोग उष्ण जल से कराया गया । साथ में 500–500 मि. लि. दूध व 500 ग्राम पपीता प्रयोग किया गया ।

उपरोक्त अध्ययन के साथ शोथ निदानों का जन्तु परीक्षाणार्थ 50 एल्बिनो रेट्स पर 5 वर्ग बनाकर परीक्षण किया गया ।

1 ले वर्ग में 10 जन्तुओं पर सामान्य आहार प्रयोग

2 रे वर्ग में 10 चूहों पर सर्षप तैल 1/5 मि.लि. 10 दिन तक

3 रे वर्ग में 10 चूहों पर सत्यानाशी तैल 1/5 मि.लि. 10 दिन तक

4 थे वर्ग में 10 चूहों पर 2 रा + 3 रा तैल 1/5 मि.लि. 10 दिन तक

5 वें वर्ग में 10 चूहों पर 2 रा + 3 रा + दही + नमक 1/3 मि.ग्रा. 10 दिन तक दिया गया ।

1 ले वर्ग के चूहों का स्वास्थ्य 11वें दिन सामान्य,

2 रे वर्ग के चूहों में स्वास्थ्य में 11वें दिन अभिवृद्धि,

3 रे वर्ग के चूहों में रेचन व कृशता,

4 थे वर्ग में आहार मात्रा में कमी व 5 की मृत्यु ।

5 वें वर्ग में शोथ, 8 की 10 वें दिन तक मृत्यु ।

कंस हरीतकी प्रयोग में 45 प्रतिशत आतुरों को लाभ, 20 प्रतिशत को सामान्य लाभ । 35 प्रतिशत को लाभ नहीं रहा ।

काय चिकित्सा–48

प्रवाहिका रोग – वत्सकादि घनवटी (चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. बृजभूषण पाण्डेय
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 173

आमज व्याधियों में प्रमुख रोग प्रवाहिका की चिकित्सा का अनुसंधानात्मक ज्ञान ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

प्रवाहण, पुनः मलप्रवृत्ति, अल्पाल्प व श्लेष्मयुक्त मल प्रवृत्ति इन चार लक्षणों के आधार पर 20 रोगियों का चयन कर, वत्सकादि घनवटी (चक्रदत्त) 4 से 8 रत्ती (500–1000 मि.ग्रा.) तक दिन में 3 बार सुखोष्ण जल से 15 दिन तक प्रयोग किया गया ।

14 आतुरों में पूर्ण लाभ रहा, 4 में सामान्य लाभ, 2 को लाभ नहीं हुआ ।

औषध से तीव्र विबंध होता है ।

काय चिकित्सा–49

विषम ज्वर पर पंचतिक्त घन वटी का चिकित्सकीय अध्ययन

अध्येता	:	डा. रविशंकर राय
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 159

विषम ज्वर पर सर्वसुलभ औषधि का प्रायोगिक अध्ययन करना ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

ज्वर मापन एवं आतुरवृत्त पत्रकानुसार ही 20 आतुरों का चयन किया गया। चिकित्सा पूर्व रक्तपरीक्षण द्वारा मलेरिया परजीवी (Malarial parasite) की उपस्थिति भी आवश्यक निदान आधार रही । पंचतिक्तघनवटी 2–2 ग्राम की 3 मात्रा 10 दिन तक दी गयी ।

14 रोगियों में ज्वर मोक्ष के साथ 2 पूर्ण लाभ हुआ। 5 रोगियों को ज्वर मोक्ष पूरी तरह नहीं हुआ, किन्तु अन्य लक्षणों में लाभ परिलक्षित होता है । एक को कोई लाभ नहीं हुआ।

काय चिकित्सा–50

वाजीकरण के परिप्रेक्ष्य में कपिकच्छु पाक का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. दिनेश्वर प्रसाद
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 185

कपिकच्छुपाक की फलश्रुतियों का वाजीकरण के परिप्रेक्ष्य में प्रयोगात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आयुर्वेदीय एवं प्रयोगशालीय शुक्र परीक्षण के आधार पर 32 आतुरों को अल्पशुक्रता एवं नष्ट शुक्रता निदान कर, दो वर्गों में विभक्त किया गया ।

अल्पशुक्रता के 13 रोगियों में से 11 को संशोधन पूर्वक व नष्ट शुक्रता के 19 रोगियों में से 11 को संशोधन पूर्वक कपिकच्छुपाक 20 ग्राम प्रतिदिन 2 बार न्यूनतम 45 दिन तक अधिकतम 100 दिन तक प्रयोग किया गया । साथ में दूध दिया गया ।

दोनों वर्गों में संशोधन पूर्वक औषध प्रयोग से शुक्र मात्रा में 4.47 प्रतिशत सुधार, शुक्राणु संख्या में 6.08 प्रतिशत, शुक्राणु में 6.26 प्रतिशत तक का वृद्धयात्मक सुधार परिलक्षित हुआ। संशोधन रहित चिकित्सा परिणाम अध्येता ने नही दिये हैं ।

काय चिकित्सा–51

तमक श्वास में शंखमल्ल योग (चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. अशोक कुमार जैन
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1981 ; 174

तमक श्वास में कफवातात्मकता में वात कफ नाशक शंखमल्ल योग का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्‌देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार तमक श्वास के 30 रोगियों को दो वर्गों में विभक्त किया।

''अ'' वर्ग में 22 रोगियों को 1/2 से 1 रत्ती की मात्रा में शंखमल्लयोग प्रतिदिन 3 बार दूध की मलाई से 15 दिन तक दिया गया । श्वास की उग्रता में सोमलता चूर्ण 3 ग्राम का फाण्ट बनाकर कई बार दिया गया ।

''ब'' वर्ग में 8 रोगियों को प्लेसिबो कैप्सूल दिये गये ।

वर्ग ''अ'' में 22 में से 6 रोगियों को सामान्य लाभ, 15 को आंशिक लाभ व 11 को अलाभ रहा ।

वर्ग ''ब'' में 2 रोगियों को आंशिक लाभ व शेष 6 को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–52

वाजीकरणान्तर्गत शुक्रक्षयज क्लैब्य (नपुंसकता) में कामदेव घृत की कार्मुकता

अध्येता	:	डा. ओमप्रकाश शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1982 ; 163

आयुर्वेदिक वाजीकरण कामदेवघृत (चक्रदत्त) का आधुनिक मापदण्डों पर मूल्यांकन एवं शुक्रक्षयज क्लैब्य में अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आयुर्वेदीय रोगी रोग परीक्षा विधि के अनुसार कुल 20 रोगी चयनित कर दो वर्ग बनाये गये ।

''अ'' वर्ग में 15 आतुरों को संशोधन (स्नेह विरेचन) पूर्वक औषधि (कामदेव घृत) 20 ग्राम एकबार दूध के साथ 30 दिन तक दी गयी ।

''ब'' वर्ग में बिना संशोधन वही मात्रा 30 दिन तक दी गयी । (5 रोगियों में)

शास्त्र निर्देशानुसार संशोधन व असंशोधन किया गया, किन्तु दोनों ही वर्गों में 60 प्रतिशत लाभ समान रूप से देखने में आया ।

लाभ के रूप में शुक्र परीक्षण कराया गया, जिसमें शुक्र कीट गति, जीवित मृत अनुपात, विकृत रचनाओं की उपस्थिति को आधार माना गया, जिनमें लाभ 60 प्रतिशत आंका गया।

काय चिकित्सा–53

अग्निमुख लौह का रक्तवृद्धिकर प्रभाव

अध्येता	:	डा. श्रीनिवास शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1982 ; 204

रक्ताल्पता अनेक रोगों में आवश्यक एवं दु:निवार्य लक्षण के रूप में पायी जाती है। अग्निमुख लौह (चक्रदत्त) की फलश्रुति का इस रोग में वैज्ञानिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक एवं Hb% (हीमोग्लोबिन प्रतिशत) श्वसन गति, शरीर भारअंकन रोगी चयन का आधार रहा । 25 आतुरों को प्रयोगार्थ चयनित कर, अग्निमुख लौह 500–500 मि.ग्रा. 8–8 घन्टे के अन्तर से दिन रात में 3 बार दुग्धानुपान से दिया गया।

चयनित रोगियों में हीमोग्लोबिन प्रतिशत 7.6 से 10 ग्राम प्रतिशत था, औसत भार 35 कि.ग्रा. से 55 कि.ग्रा. था ।

सांख्यकीय परीक्षण परिणाम के आधार पर टेब्यूलेटेड वेल्यू 2.093 रही व केल्क्यूलेटेड वेल्यू 5.2796 है । लक्षणों के आधार पर तथा हीमोग्लोबिन प्रतिशत के आधार पर लाभालाभ परीक्षण किया गया ।

काय चिकित्सा–54

तमक श्वास में शोधन

अध्येता	:	डा. हरिश्याम दुबे
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1982 ; 181+4

तमक श्वास पर अद्यावधि उपलब्ध साहित्य का संकलन एवं इसमें संशोधन की कार्मुकता का आकलन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

रोगी चयन का आधार लक्षणात्मक इतिवृत्त रहा । वमनार्ह विरेचनार्ह निर्णय शास्त्रीय आधारों से किया जाकर 20 रोगी चयनित किये गये । स्नेहन, स्वेदन पूर्वक मदनफल योग से वमन, मधु, सैन्धव वमनोपग तथा मधुयष्टि शृत दुग्ध को आकण्ठ पूरणार्थ देकर वमन कराया गया, विरेचनार्थ–हरीतकी, कुटकी, आरग्वध, द्राक्षा एवं एरण्ड स्नेह के भिन्न 2 प्रयोग किये गये ।

8 रोगियों को 50 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक लाभ रहा, लेकिन शेष में लाभ नगण्य रहा ।

काय चिकित्सा–55

वातातपिक रसायन एवं मधुयष्टि अवलेह (चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. महेश चन्द्र शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1982 ; 173

रसायन प्रयोग की वातातपिक विधि का अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है। यदृच्छा निदर्शन विधि (रेण्डम सेम्पलिंग) से 20 आतुरों (व्यक्तियों) का चयन किया गया।

''क'' वर्ग में 10 आतुरों को स्नेहन, स्वेदन, विरेचन एवं संसर्जन क्रमपूर्वक मधुयष्टि अवलेह (च.चि.) 36 ग्राम प्रतिदिन दो बार दूध से प्रयुक्त किया गया ।

''ख'' वर्ग में 10 आतुरों को 3 दिन तक एरण्ड स्नेह देकर सामान्य संशोधनोपरान्त वही औषध मात्रा दी ।

''क'' वर्ग के रोगियों में रसायन गुणोपलब्धि अपेक्षाकृत बहुत अधिक रही ।

काय चिकित्सा–56

कास रोग का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. रविलता जैन
निर्देशक	:	वैद्य रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1982 ; 197

कास रोग की निदानात्मक प्रक्रिया के ज्ञानपूर्वक भागोत्तर गुटिका की कार्मुकता का अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

त्रिविध परीक्षण एवं विशेष इतिवृत्त के आधार पर 50 आतुरों का चयन किया गया ।

भागोत्तर गुटिका 6 से 12 गोली प्रतिदिन 3–3 घन्टे के अन्तर से कोष्ण जल से 21 दिन तक दी गयी ।

परिणाम प्रगति का आधार कार्यफल सुखावाप्ति (च.वि. 8) रहा ।

कास भेदानुसार वातिक कास के 60 प्रतिशत आतुरों में पूर्ण लाभ, पैत्तिक कास के 20 प्रतिशत आतुरों को लाभ तथा श्लैष्मिक कास के 10 प्रतिशत आतुरों को लाभ हुआ।

काय चिकित्सा–57

रक्तचाप एवं ब्राह्म रसायन (उच्च रक्तचाप का निदान चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. जगदीश प्रसाद पाठक
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1983 ; 198

उच्च रक्तचाप की अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्या का आयुर्वेदीय रसायन चिकित्सा से निवारण ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

विस्तृत इतिवृत्त व रक्तदाब के यांत्रिक अंकन के आधार पर 25 आतुरों का चयन कर ब्राह्म रसायन (च.चि.) 10–10 ग्राम दिन में 3 बार कवोष्ण दुग्ध से 35 दिन तक दिया गया।

25 आतुरों में से लाक्षणिक व रक्तदाब के यांत्रिक अंकन में 6 को लाभ रहा, 11 को सामान्य लाभ तथा 8 को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–58

आमवात का चिकित्सात्मक अध्ययन एवं शिवागुग्गुलु प्रयोग

अध्येता	:	डा. हरवीरसिंह रघुवंशी
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1983 ; 199

आमवात जैसी कष्टप्रद व्याधियों में सद्यः फलप्रद आयुर्वेदीय चिकित्सा सिद्ध योगों के बिना संभव नहीं प्रतीत होती । इसलिये शिवा गुग्गुलु का प्रयोग किया जा रहा है ।

दशविध, अष्टविध एवं निदान पंचक रोग निदान का आधार रहा, 50 आतुरों का चयन कर सभी रोगियों को 21 दिन तक शिवा गुग्गुलु (रसेन्द्रसार संग्रह) की 6 ग्राम की मात्रा, 3 मात्राओं में विभक्त कर कवोष्ण जलानुपान से दी गयी ।

आतुर प्रगति प्रति सप्ताह शोथ, रक्तदाब, हस्तग्रहण शक्ति, सिद्धासन एवं उत्कटासन पर बैठने की स्थिति से किया गया ।

31 आतुरों में 75 प्रतिशत लक्षणों में तथा 9 आतुरों में 50 प्रतिशत लक्षणों में लाभ रहा। 10 आतुरों में औषध प्रभाव नगण्य रहा ।

काय चिकित्सा–59

आयुर्वेदीय परिप्रेक्ष्य में डिप्रेसिव इलनेस का अध्ययन एवं ज्योतिष्मती का प्रयोग

अध्येता	:	डा. सुधीन्द्र कुमार श्रृंगी
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
सह–निर्देशक	:	डा. पी.एस. गहलोत
वर्ष	:	1983 ; 199

आयुर्वेदोक्त कफोन्माद व डिप्रेसिव इलनेस के लक्षणों में साम्य को देखते हुए इस पर ज्योतिष्मती प्रयोग का आधुनिक मापदण्डों पर अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

फेनर्स डायग्नोस्टिक क्राइटेरिया के आधार पर 30 रोगियों का चयन कर मानसिक रोग विभाग, सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज होस्पीटल, जयपुर में अध्ययन किया गया ।

L_1 वर्ग में 15 रोगियों को ज्योतिष्मती तैल 325 मि.लि. दो बार पहले 15 दिन तक देकर बाद में 15 दिन प्लेसिबो दिया गया ।

L_2 वर्ग में पहले 15 दिन 15 रोगियों को प्लेसिबो पर रखकर, बाद के 15 दिन ज्योतिष्मती तैल 325 मि.लि. 2 बार दिया गया ।

30 रोगियों में से 21 रोगियों में ज्योतिष्मती प्रयोग काल में लक्षणों में पूर्ण लाभ हुआ, 7 को अल्पलाभ व 2 को लाभ नहीं हुआ ।

L_2 वर्ग में प्लेसिबो के प्रथम 15 दिन में कोई लाभ नहीं हुआ ।

Kaya Chikitsa - 60

CLINICAL STUDY OF NIRVISHI SINDUR KALPA IN THE MANAGEMENT OF HYPERTENSION

Scholar	:	Dr. K. Govardhan
Guide	:	Prof. Ram Prakash Swamy
Year	:	1983 ; 163+12

Hypertension has become the most common of cardiovascular disease and effects most of the population in the world. It has therefore considered to be a highly appropriate subject for research.

25 Patients of essential hypertention were included in the study on the basis of sphygmomanometer reading, detailed history and clinical findings. Nirvishi sindur (4 parts of Nirvishi, 1 part of Rasa Sindur) 2.5 gms. daily in four equal doses given 6 hrly. for 21 days.

60% of the patients much improved, 80% were improved & 32% of the patients were found a notable reduction with partial relief in symptoms.

काय चिकित्सा–61

युवान पिड़िका पर कुंकुमाद्य तैल का प्रभाव एवं परिणाम का अध्ययन

अध्येता	:	डा. बालकृष्ण शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1984 ; 186

युवान पिड़िका यौवनावस्था की एक व्यापक व गंभीर समस्या है, आयुर्वेद शास्त्रों में इसका साहित्य अल्पतम उपलब्ध है । इस विषय का रोग नैदानिक साहित्य आयुर्वेद में उपलब्ध कराना तथा चिकित्सात्मक अध्ययन ही महानिबंध का मुख्य उद्देश्य है।

शाल्मली कण्टक के समान आकृति वाली, प्रभूत मुखदूषिकाओं से युक्त 70 आतुर (45 पुरुष, 25 महिलायें) प्रयोगार्थ चयनित किये गये ।

व्याधि की उग्रतानुसार त्रिफला क्वाथ से मुख धोने के पश्चात् प्रातः रात्रि 2–2 ग्राम कुंकुमाद्य तैल का ब्राह्य प्रयोग लेपनार्थ किया गया ।

परिणाम का आधार पिड़िकाओं का आधार, आयतन, संख्या, आतुर प्रकृति, वर्ण, गन्ध, सगर्भ द्रव्य आदि में परिवर्तन को माना गया ।

16 रोगियों में 100 प्रतिशत लाभ रहा, 8 रोगियों में 60 प्रतिशत से 95 प्रतिशत तक, 41 रोगियों में 20 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक व 5 रोगियों में 10 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक लाभ हुआ ।

काय चिकित्सा–62

मेदस्विता–स्थौल्य पर लौह रसायन प्रयोग (साहित्यिक, नैदानिक एवं चिकित्सात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. दिनेशचन्द्र गुप्त
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1984 ; 212+5

स्थौल्य रोग की प्रभावी चिकित्सा का अन्वेषण ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

चलस्फिगुदरस्तनुः अयथोपचय, उत्साह हानि तथा आदर्श ऊँचाई व तदनुसार भारतालिका के अनुसार 10 प्रतिशत अतिरिक्त भार वाले 26 रोगी लेकर दो वर्ग बनाये गये।

दोनों वर्गों के रोगियों को चिकित्सा पूर्व 3 रात्रि तक 3 ग्राम हरीतकी चूर्ण उष्ण जल से दिया गया ।

''प्रथम वर्ग'' में औषध के साथ पथ्यपालन व अपथ्य त्याग कराया गया ।

''द्वितीय वर्ग'' में कोई पथ्यापथ्य निर्देश नहीं दिया गया । प्रातः सायं 1 से 2 ग्राम औषध 250 मि.लि. दूध से 45 दिन तक दी गयी ।

''प्रथम वर्ग'' में सर्वाधिक भार ह्रास 3 से 6 कि.ग्रा. तक 81.25 प्रतिशत रोगियों में हुआ। न्यूनतम भार हानि 2 से 4 कि.ग्रा. 23.52 प्रतिशत रोगियों में रही ।

''द्वितीय वर्ग'' में सर्वाधिक भार हानि 1 कि.ग्रा. तक 47.72 प्रतिशत रोगियों में हुयी। पथ्यपूर्वक लौह रसायन सेवन तथा अपथ्य का सर्वदा त्याग ही लाभ का हेतु रहा।

काय चिकित्सा–63

ब्रोंकाइटिस (वातिक कास) पर कण्टकार्यवलेह का प्रभाव

अध्येता	:	डा. निरंकार गोयल
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1985 ; 187

आधुनिक चिकित्सा के रोग ब्रोंकाइटिस (Bronchitis) का आयुर्वेद के सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना तथा उस पर कण्टकार्यवलेह का प्रायोगिक अध्ययन करना अध्येता का उद्देश्य था ।

आतुरवृत्तपत्रकानुसार तथा राजयक्ष्मा रोग से सापेक्ष विनिश्चत कर लक्षणों के रूप में Acute Bronchitis के 20 रुग्णों को लेकर उन्हें 20–20 ग्राम की दो मात्रा उष्ण पेय के साथ 21 दिन तक दी गयी।

14 आतुरों को 80 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक लक्षणों का उपशमन हुआ । Acute Bronchitis व वातिक कास में प्रथमावस्था में सामान्यत्व है तथा दोनों में कण्टकार्यवलेह समान रूप से प्रभावी है ।

काय चिकित्सा–64

शिरोबस्ति की कार्मुकता विशेषतः वातिक शिरोरोग के सन्दर्भ में

अध्येता	:	डा. अशोक कुमार सक्सैना
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1985 ; 237

शिरोबस्ति की कार्मुकता एवं उसकी चिकित्सात्मक प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन करना, अध्येता का उद्देश्य था ।

आतुरवृत्त पत्रक के अनुसार वातिक शिरो रोग के 24 आतुरों को लक्षणों के आधार पर चयनित कर दो वर्ग बनाए गए । प्रथम वर्ग के 6 रुग्णों को तिल तैल की व द्वितीय वर्ग के 18 रुग्णों को बला तैल से शिरोबस्ति दी गई ।

तिल तैल के प्रयोग वाले प्रथम वर्ग के 6 रुग्णों में से 2 को पूर्ण लाभ, 1 को मध्यम, 1 को आंशिक तथा दो को अलाभ रहा ।

द्वितीय वर्ग के बला तैल के प्रयोग रुग्णों में 15 को पूर्ण लाभ, 2 को मध्यम लाभ व 1 को आंशिक लाभ हुआ ।

काय चिकित्सा–65

निद्राकर चिकित्सा का महत्व

अध्येता	:	डा. कला कासलीवाल
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1985 ; 180

विभिन्न रोगों के लक्षणों में शांति हेतु निद्रा की महत्वपूर्ण भूमिका है । श्वास रोग के रुग्णों पर निद्राकर द्रव्यों के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु त्रैलोक्य सम्मोहन रस (रस तरंगिणी) के माध्यम से कार्मुकता मूल्यांकन ही महानिबन्ध का प्रमुख उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार श्वास व अनिद्रा रोग के क्रमशः 25 एवं 10 आतुरों पर त्रैलोक्य सम्मोहन रस (रस तरंगिणी) का श्वास रोग के रुग्णों में 500 मि.ग्रा. की 4 मात्राएं तथा अनिद्रा के रुग्णों में 2 मात्राऐं दिन भर में दी गई ।

40 प्रतिशत रुग्णों को निद्रा में 3 से 6 घण्टे प्रतिदिन की वृद्धि हुई । 32 प्रतिशत रुग्णों में 2 से 3 घण्टे की वृद्धि तथा 28 प्रतिशत रुग्णों में 1 से 2 घण्टे की निद्रा में वृद्धि परिलक्षित हुई ।

काय चिकित्सा–66

चिकित्सा में बस्ति का महत्व एवं मांसक्षय में मात्रा बस्ति का मांसवृद्धिकर कर्म

अध्येता	:	डा. रामनरेश शर्मा
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1985 ; 178

मांसक्षय में मात्राबस्ति के वृद्धयात्मक प्रभाव का मूल्यांकन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

शरीर भार, उदर, ग्रीवा, स्फिग्, वक्ष, ऊरू, जङ्घा एवं बाहु की नाप में सामान्य आदर्श तालिका की अपेक्षा 20 प्रतिशत से अधिक न्यूनता वाले 20 रोगियों का चयन किया गया।

बला तैल की स्निग्ध बस्ति एवं बला, गुडूची, रास्ना क्वाथ की निरुह बस्ति का प्रयोग शास्त्रोक्त मात्रा में बस्ति विधान से किया गया ।

60 मि.लि. की स्निग्ध बस्ति (अनुवासन) एवं 11 निरुह बस्ति दी गयी ।

बला तैल (च.चि. 28/148–156) का प्रयोग किया, मात्रा बस्ति में कुल प्रयोज्य मात्रा 1.5 पल रही ।

19 रोगियों को 20 प्रतिशत भार वृद्धि हुई तथा 1 को नगण्य वृद्धि परिलक्षित हुयी।

Kaya Chikitsa - 67

A Clinical study of "TAMRA KALPA" on "YAKRI DUDARA"

Scholar	:	Dr. Arun Kumar Pandey
Guide	:	Prof. Ram Prakash Swamy
Year	:	1986 ; 205+10

Liver disorders are common and serious problem of developing countries. It requires more and more clinical researches, so for it has taken as post graduate study.

Enlarged Liver, Mandagni, Tenderness in hepatic region were the basis of diagnostic selection. 30 patients selected for the study in 4 groups.

X group 10 patients given Tamra Kalpa in Kalpa Vidhi.

Y group 5 patients given Placebo Cap.

Z group 10 patients given Tamra in constant dose.

Y-Z group 5 patients Tamra constant dose 20 days + 20 days Placebo.

Initial dose of Tamra Kalpa was 250 mg/diem and then gradually increased by 125 mg/diem up to 2 gms. a day. Then discended upto 250 mg/diem in same way. Total course was of 42 days.

Result of group X were better with 75% of the pts. relieved by 50% symptoms in 42 days gradually.

Kaya Chikitsa - 68

A Clinical study of "TRIPHALADI LAUHA" on "KAMLA"

Scholar	:	Dr. Rampal
Guide	:	Prof. Ram Prakash Swamy
Year	:	1986 ; 181+1

The object of the study is to judge the efficacy of Triphaladi Lauha (Charaka) on Kamla.

20 patients were selected for trial with the help of Ayurvedic and modern diagnostic parameters.

Triphaladi Lauha (Ch.Chi.) administered 3 gms. daily in three equally divided doses, in the 3 gms. Ghee and 6 gms. honey for 20 days.

Hb% was increased in each patient in range of 0.1 to 0.8 gm% with in 20 days. In 5 cases Serum bilirubin level came down within normal limits, 15 cases did not show improvement in S. Bilirubin test, 12 pts. responded well in symptoms.

Kaya Chikitsa - 69

A Clinical study of shodhanottar "BHARANGYADI KWATHA" in "TAMAK SWAS" (Bronchial Asthma)

Scholar	:	Dr. Vidya Vrat Chikara
Guide	:	Prof. Ram Prakash Swamy
Year	:	1986 ; 161+17

Swasa is maha vyadhi and difficult challange for treatment. Shodhana is said the best way in treatise. Shodhanottara Bharangyadi Kwatha is tried therfore as post graduate research work.

Diagnosis done by Ayurvedic system. 44 patients taken & divided in 4 groups (11 each in a group).

Ist group Bharangyadi Kwatha+Shodhana.

IInd group Kwatha given without Shodhana.

IIIrd group Kwatha Kana was given.

IVth group Control group given Asthalin tablet.

Result in Ist group 8 patients relieved excellent, 2 patients moderately, 1 patient shown poor effect of drug.

IInd group 5 shown better, 2 moderate, 4 poor.

IIIrd group 4 shown satisfactory results, rest were not respond well.

IVth group 4 shown excellent effects, 3 moderate, 4 poor.

Shodhanotar Bharangyadi Kwatha was shown better results than control drug Asthalin tab.

काय चिकित्सा–70

प्लीहोदर पर वर्द्धमानपिप्पली रसायन की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता	:	डा. ओमप्रकाश शुक्ल
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1986 ; 177

प्लीहोदर रोग की विकासशील एवं निर्धन देशों में व्यापकता तथा शास्त्रों में अल्पता से निर्दिष्ट इस व्याधि का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रक के अनुसार प्लीहोदर प्रत्यात्म लक्षण व उदरवृद्धि से पीड़ित 20 रोगी प्रयोगार्थ चयनित किये गये ।

150 मि.ग्रा. औसत वजन वाली एक पिप्पली से प्रारंभ कर प्रतिदिन 5 पिप्पली बढ़ाते हुये 11 वें दिन 50 पिप्पली व 12 वें दिन से घटाते हुये 22 वें दिन तक सेवन करायी गयी । पथ्य व अनुपान रूप में दूध 250 मि.लि. से बढ़ाते हुए 2 लीटर तक दिया गया।

17 रोगियों पर प्लीहावृद्धि, उदर गौरव, मंदाग्नि लक्षणों में 50 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक लाभ रहा । 3 रोगियों पर प्रभाव नगण्य रहा ।

काय चिकित्सा–71

परिणामशूल में शतावरीमण्डूर की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता	:	डा. राकेश कुमार
निर्देशक	:	वैद्य बनवारी लाल मिश्रा
वर्ष	:	1987 ; 200

परिणामशूल में शतावरीमण्डूर (भै.र.) की कार्मुकता का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक तथा बेरियम मील एक्स–रे के द्वारा रोगनिदान कर 20 रोगियों को प्रयोगार्थ चयनित किया गया ।

शतावरी मण्डूर 1 ग्राम प्रातः एवं सायं भोजन से पूर्व व भोजनोत्तर की 4 मात्राओं में दुग्धानुपान से दिया गया । कुल प्रयोग अवधि 28 दिन रही ।

कुल अधीत 20 रोगियों में से 13 को पूर्ण लाभ, 2 को सामान्य लाभ रहा तथा 5 को कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–72

पक्षाघात में अर्द्धांगवातारि रस का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. टेकचन्द
निर्देशक	:	वैद्य बनवारी लाल मिश्रा
वर्ष	:	1987 ; 165

पक्षाघात रोग में पराश्रयता के कारण, रोगी की दयनीयता के कारण अनुसंधानात्मक अध्ययन किया गया ।

आयुर्वेदीय त्रिविध प्रमाणों द्वारा रोग निदान कर आधुनिक विज्ञान सम्मत सामान्य तंत्रिका परीक्षायें भी की गयी । कुल 18 आतुर चयनित किये गये ।

आतुरों के ''अ'' वर्ग में 8 रोगियों को अभ्यंग व स्नेहन, स्वेदनपूर्वक अर्द्धांगवातारि रस 250 मि.ग्रा. सुबह शाम मधु से दिया गया ।

''ब'' वर्ग में स्नेहन, स्वेदन के बिना ही अर्द्धांगवातारि रस 250 मि.ग्रा. दो बार दिया गया।

स्नेहन, स्वेदन व अभ्यंग पूर्वक औषध प्रयोग का परिणाम 56.84 प्रतिशत रहा जबकि ''ब'' वर्ग में परिणाम 31.87 प्रतिशत रहा ।

काय चिकित्सा–73

रसायनान्तर्गत सर्पिगुड़ का जरा पर प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. हेमन्त कुमार गुप्ता
निर्देशक	:	वैद्य बनवारी लाल मिश्रा
वर्ष	:	1987 ; 218+5

जरा का सैद्धान्तिक एवं रसायन द्रव्यों का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

40 से 60 वर्ष वाले वली पलित, खलित अनवस्थित चित्तत्व, स्मृतिह्रास और संधि शैथिल्य आदि 20 जरा लक्षणों से युक्त 52 रोगी लिये गये ।

''क'' वर्ग में 22 रोगियों को 25–25 ग्राम सर्पिगुड़ प्रथम (चरक) प्रातः सायं खाली पेट उष्ण दुग्ध से 5 से 8 सप्ताह तक दिया ।

''ख'' वर्ग में 30 रोगियों को 25–25 ग्राम सर्पिगुड़ द्वितीय (चरक), मृतसंजीवनी सुरा 20–20 मि.लि. सम जल मिलाकर 4 सप्ताह तक दिया गया ।

''क'' वर्ग में Hb% 8.8 ग्राम % से बढ़कर 10.53% तक हुआ, भारवृद्धि 2.21 कि.ग्रा. औसत बढ़ी, श्वसन धारण क्षमता में 73.86% सुधार, ग्रिप टेस्ट में 23% सुधार, व्यायाम क्षमता में 36.6% सुधार हुआ ।

''ख'' वर्ग में Hb% में 8.5 से बढ़कर 10 ग्राम % तक सुधार, भारवृद्धि औसत 2. 24 कि.ग्रा., श्वसन धारण क्षमता में 85.05% सुधार, ग्रिप टेस्ट में 31% तक सुधार, व्यायाम शक्ति में 38% सुधार हुआ ।

काय चिकित्सा–74

अम्लपित्त पर खण्डकूष्माण्डक अवलेह का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. राकेश मोहन
निर्देशक	:	वैद्य बनवारी लाल मिश्रा
वर्ष	:	1987 ; 170

वैज्ञानिक युग में दिनचर्या, ऋतुचर्या, आहारविधि प्रविचार के मिथ्याप्रयोग से तथा अहितकर व्यसनों के प्रयोग से अम्लपित्त रोग में वृद्धि हुयी है, इसीलिये आहार रूप औषधि का प्रायोगिक अध्ययन किया जा रहा है ।

आतुरवृत्त पत्रक व आमाशयिक रस के एफ.टी.एम. टेस्ट द्वारा रोगी चयनित कर संस्थान की रसायनशाला में निर्मित खण्डकूष्माण्डकावलेह 25–25 ग्राम प्रातः सायं दुग्धानुपान से 28 दिन तक दिया गया । पथ्य रूप में लघ्वन्न का प्रयोग किया गया ।

सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार हेतु 10 आतुरों में एफ.टी.एम. टेस्ट कराया गया, 7 आतुरों में 20 से 22 MEQ स्वतंत्र लवणाम्ल पाया गया । 3 आतुरों में 60 से 73 MEQ लवणाम्ल रहा । सभी आतुरों में औसत स्वतंत्र लवणाम्ल 65 से 82 MEQ रहा, जिसमें 45 से 60 MEQ तक कमी आयी तथा 70% लक्षणोपशमन भी हुआ ।

काय चिकित्सा–75

जलोदर चिकित्सा में ताम्रपर्पटी की कार्मुकता

अध्येता	:	डा. विद्यानन्द त्रिपाठी
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1987 ; 180

जलोदर रोग में ताम्रभस्म की विशिष्ट कल्पना सोमनाथी ताम्र का पर्पटी कल्प के रूप में उपयोग एवं अनुसंधानात्मक प्रक्रिया का ज्ञान ही महानिबंध का उद्‌देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक में शास्त्रोक्त आप्तोपदेश के आधार पर कुल 10 रोगियों का चयन किया गया ।

आरोही–अवरोही क्रम से अग्निबलानुसार 50 मि.ग्रा. से 250 मि.ग्रा. तक की प्रतिदिन 2 मात्राओं में सोमनाथी ताम्रभस्म से निर्मित पर्पटी का उपयोग किया गया । पर्पटी कल्प विधि रही ।

40 प्रतिशत आतुरों में लाभ श्रेष्ठ रहा, 1 आतुर में मध्यम लाभ तथा शेष 5 या 50 प्रतिशत आतुरों में कोई लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–76

आमातिसार (अमीबियासिस) में वृहन्नायिका चूर्ण की कार्मुकता का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. कृष्णमुरारी अग्रवाल
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1988 ; 213

अग्निमूलक व्याधियों पर अब तक सर्वाधिक शोध प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं, फिर भी आमातिसार का निर्मूलन संभव नहीं हुआ है । द्रव्यगुण के मूल सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में इस व्याधि हेतु वृहन्नायिका चूर्ण (रसेन्द्र चिन्तामणि) सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। इसका अनुसंधानीय अध्ययन ही महानिबंध का उद्‌देश्य है ।

प्रायोगिक अध्ययन हेतु 100 रोगी (9 अंतरंग, 91 बहिरंग) चयनित किये गये । आतुर चयन का आधार रोगेतिवृत्त में निर्दिष्ट पुनः पुनः, द्रव, सश्लेष्म, सशूल, प्रवाहण युक्त मल प्रवृत्ति रहा ।

500–500 मि.ग्रा. औषधि कैप्सूल में प्रतिदिन मध्यान्ह सायं दो बार दो–दो कैप्सूल दिये गये अनुपान तक्र अथवा जल, पथ्य कृशरा, भृष्ट धान्य, लाजा व केला रहा।

प्रयोग परिणाम दृष्ट्या औषधि रोग के प्रत्यात्म लक्षण सहित 20 लक्षणों में से 13 लक्षणों पर अर्थात् 60 प्रतिशत पर प्रभावी है ।

काय चिकित्सा–77

वाजीकरण के परिप्रेक्ष्य में अमृत भल्लातक की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता	:	डा. नरेश कुमार
निर्देशक	:	वैद्य बनवारीलाल मिश्रा
सह–निर्देशक	:	डा. दयाशंकर मिश्रा
वर्ष	:	1988 ; 163

वाजीकरण के परिप्रेक्ष्य में अमृतभल्लातक (योग रत्नाकर) का अशुक्राणुता (Azospermia) व अल्पशुक्राणुता (Oligospermia) पर प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक तथा प्रयोगशालीय शुक्र परीक्षण में 60 मिलियन प्रति मि.लि. से कम अथवा अशुक्राणुता वाले 25 रोगियों का चयन किया गया ।

शोधनसहित व शोधनरहित औषध प्रयोग के दो वर्ग बनाये गये । 5 से 25 ग्राम औषध वृद्धिगत क्रम से प्रति 5वें दिन 5 ग्राम बढ़ाकर कुल 25 दिन तक दी गयी । अधिकतम प्रयोज्य मात्रा 25 ग्राम प्रतिदिन रही ।

लाभ ज्ञान हेतु शुक्र मात्रा, शुक्राणु संख्या व गति में 75–100% वृद्धि को पूर्ण लाभ तथा 50–75% वृद्धि को मध्यम लाभ तथा 0–50% को अल्प लाभ माना गया ।

शोधित + औषध प्रयोग से 44.44% रोगियों को पूर्ण लाभ, 5.55% में मध्यम लाभ तथा शेष में लाभ नहीं रहा ।

अशोधित + औषध प्रयोग से 33.30% आतुरों में लाक्षणिक रूप से लाभ, शुक्र परीक्षण से 27.33% में पूर्ण लाभ, 16.65 % मे मध्यम लाभ रहा ।

अमृत भल्लातक शोधनोत्तर चिकित्सा में अधिक प्रभावी रहा, किन्तु शुक्राणु संख्या बढ़ाने में अशुक्राणुता में कोई लाभ नहीं रहा, जबकि शुक्राणु गति वृद्धि में प्रभावकारी है।

काय चिकित्सा–78

गृध्रसी में बस्तिकर्म का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय
निर्देशक	:	वैद्य बनवारीलाल मिश्रा
सह–निर्देशक	:	डा. राधेश्याम शर्मा
वर्ष	:	1988 ; 189

शोधन चिकित्सा का गृध्रसी रोग पर प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक व SLR के द्वारा 20 रोगियों का चयन कर 1 वर्ष से अधिक जीर्ण रोगियों को 30 कर्म बस्ति, 6 से 12 माह तक जीर्ण 7 रोगियों को 16 काल बस्ति तथा अल्प लक्षण युक्त 3 सद्यः रोगियों को 8 योग बस्तियों का प्रयोग कराया गया ।

कर्म बस्ति वाले 10 जीर्ण रोगियों में से 47.6 प्रतिशत को उत्तम लाभ रहा ।

काल बस्ति वाले 7 मध्यम जीर्ण रोगियों में से 33.3 प्रतिशत को लाभ रहा ।

योग बस्ति वाले 3 रोगियों को 14.30 प्रतिशत लाभ रहा ।

गृध्रसी रोग के स्पष्ट निदान हेतु एक्स–रे व माइलोग्राम की व्यवस्था अपेक्षित है।

काय चिकित्सा–79

अर्शोरोग में अर्शोघ्नी वटी का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. महेश कुमार शर्मा
निर्देशक	:	प्रो. रामप्रकाश स्वामी
वर्ष	:	1988 ; 225

अर्शोरोग में अर्शोघ्नी वटी की कार्मुकता एवं इयत्ता के मूल्यांकन हेतु शोध विषय का चयन किया गया ।

आतुरवृत्त पत्रक एवं विभिन्न परीक्षणों के साथ गुदस्थान प्रत्यक्ष परीक्षा द्वारा 46 अर्श रोगियों का चयन किया गया ।

अर्शोघ्नी वटी (सिद्ध योग संग्रह) की 750 मि.ग्रा. की मात्रा दिन में 3 बार सामान्य जल से 28 दिन तक दी गयी ।

46 में से 38 रक्तस्राव वाले रोगियों में 2 सप्ताह के औषध प्रयोग से 30 रोगियों में रक्तस्राव में पूर्ण लाभ, 6 को मध्यम लाभ, 2 को अलाभ रहा ।

वेदना में 14 दिन बाद 5 रोगियों में से 3 को आंशिक लाभ व 2 को लाभ नहीं हुआ।

अर्शांकुर नाश में 28 दिन के प्रयोग के बाद 32 रोगियों को पूर्ण लाभ हुआ ।

काय चिकित्सा–80

आमवात में आमवातारि वटी का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. विजयस्वरूप कौशिक
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1988 ; 214

सर्वसुलभ एवं अल्पव्ययसाध्य योग आमवातारि वटी का आमवात रोग में वैज्ञानिक अध्ययन करने की जिज्ञासा ही इस महानिबंध का चयन का हेतु था ।

आतुरवृत्त पत्रक, जिसमें मुख्य रूप में रक्त परीक्षण (TLC, DLC, ESR, RA Factor) तथा मूत्र परीक्षण (Routine, Microscopic) एवं Periodical function test में हस्तदाब शक्ति परीक्षण, हस्तग्रहण शक्ति परीक्षण आदि प्रश्न थे, के आधार पर 20–20 रुग्णों के दो वर्ग बनाकर प्रथम वर्ग (अ) को आमवातारि वटी (भैषज्य रत्नावली) का त्रिफला क्वाथ अनुपान से 2–2 ग्राम प्रातः सायं तथा द्वितीय वर्ग (ब) को आमवातारि वटी (भैषज्य रत्नावली) 2–2 ग्राम प्रातः सायं दशमूल क्वाथ के अनुपान से 4 से 5 सप्ताह तक दिया गया ।

प्रथम वर्ग (अ) के 20 रुग्णों में से 6 को उत्तम लाभ, 9 को सामान्य लाभ व 4 को अलाभ रहा । लक्षणांशों में लाभ का प्रतिशत 63.088 रहा ।

द्वितीय वर्ग (ब) के 20 रुग्णों में से 3 को उत्तम लाभ, 13 को सामान्य लाभ व 4 को अल्पलाभ रहा । लक्षणांशों में लाभ का प्रतिशत 66.18 रहा ।

काय चिकित्सा–81

श्वित्र रोग पर अवल्गुजादि गुटिका (बाह्य प्रयोगार्थ) एवं धात्री खदिर क्वाथ (आभ्यन्तर प्रयोगार्थ) की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता	:	डा. मोहिनी शर्मा
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. राधेश्याम शर्मा
वर्ष	:	1989 ; 182+3

श्वित्र रोग की उत्पत्ति के सिद्धांतों का प्रतिपादन, चिकित्सा सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण तथा शास्त्रोक्त साहित्य पर विवेचनात्मक विधा प्रस्फुटित करना ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

मण्डलोत्पत्ति तथा त्वक् वैवर्ण्य (श्वेत, ताम्र, अरुण वर्ण) को आतुर चयन का मुख्य आधार माना गया, धात्री खदिर क्वाथ का आभ्यन्तर व अवल्गुजादि वटी का मण्डल स्थान पर लेप जल में घिसकर कराया गया ।

25 रोगी लिये गये, जिनको धात्री खदिर क्वाथ 20–20 मि.लि. प्रातः सायं तथा अवल्गुजादि वटी का श्वित्र स्थान पर 75 दिन तक लेप किया गया ।

मण्डल क्षेत्र के त्वक् वैवर्ण्य में 32 प्रतिशत रोगियों को 75 प्रतिशत लाभ, 4 प्रतिशत रोगियों को 50 प्रतिशत लाभ, 16 प्रतिशत रोगियों को 25 प्रतिशत लाभ रहा तथा त्वक् वैवर्ण्य में 20 प्रतिशत रोगियों में कोई लाभ नहीं हुआ ।

औषध प्रयोग लगातार 3 वर्ष तक किये जाने से रोग मुक्ति की संभावना प्रतीत होती है।

काय चिकित्सा–82

तमक श्वास में सुधार्क योग की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता	:	डा. सुनीता शर्मा
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. दयाशंकर मिश्रा
वर्ष	:	1989 ; 208+14

सुधार्क योग (भैषज्य मणिमाला) के वैशिष्ट्य का मूल्यांकन तमक श्वास के रोगियों पर करना ही महानिबंध का विषय चयन हेतु है ।

आतुरवृत्त पत्रक तथा राजयक्ष्मा में विभेदनार्थ आधुनिक परीक्षणोपरान्त 20 रोगी चयनित किये गये ।

प्रथम वर्ग में 8 रोगियों को वमन, विरेचन पूर्वक शोधन के पश्चात् सुधार्क योग 500–500 मि.ग्रा. प्रातः, सायं, मध्यान्ह 3 बार 2–2 कैप्सूल उष्ण दुग्ध से दिये गये । अधिकतम प्रयोग विधि 30 दिन तक रही ।

श्वास वेग की उग्रता में 3–3 ग्राम सोमलता चूर्ण मधु से दिया गया । पथ्य में दलिया व सब्जी दी गयी ।

द्वितीय वर्ग में 12 रोगियों को बिना संशोधन उक्त औषध समान मात्रा व समान अनुपानपूर्वक दी गयी ।

प्रथम वर्ग में 8 रोगियों में से 62.5 प्रतिशत को उत्तम लाभ तथा 37.5 प्रतिशत को मध्यम लाभ रहा ।

द्वितीय वर्ग में 8.34 प्रतिशत को उत्तम लाभ तथा 75 प्रतिशत को मध्यम रहा, शेष 16.66 प्रतिशत को लाभ नहीं रहा ।

शोधनोपरान्त औषध प्रयोग करना अधिक उपयुक्त है ।

काय चिकित्सा–83

विषमज्वर (मलेरिया) में अचिन्त्यशक्ति रस का प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. धर्मवीर दलाल
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1989 ; 183

मलेरिया रोग की राष्ट्रीय समस्या के उन्मूलनार्थ आयुर्वेदिक औषधि का प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक तथा M.P. Positive, TLC, DLC, ESR आदि परीक्षणों द्वारा 40 रोगियों का चयन कर 2 विभाग बनाये गये।

प्रथम वर्ग में ''अ'' वर्ग में 13 नवीन ज्वर के रोगी तथा ''ब'' में 5 जीर्ण रोगी लिये, द्वितीय वर्ग में ''स'' वर्ग में 16 नवीन रोगी व ''द'' में 6 जीर्ण ज्वर रोगी लिये गये ।

''अ'' ''ब'' एवं ''स'' वर्ग के रोगियों को 100 मि.ग्रा. अचिन्त्यशक्ति रस (सिद्ध भैषज्य मंजुषा) दिन में 3 बार दूध से व ''द'' वर्ग को 50 मि.ग्रा. औषधि दिन में 3 बार दूध से दी गयी ।

''अ'' एवं ''स'' वर्ग को 3 दिन तक ''ब'' एवं ''द'' वर्ग को 6 दिन तक औषध दी। साथ में 500–500 ग्राम दूध, पपीता 500 ग्राम व मुनक्का 50 से 100 ग्राम तक दिया गया।

अ वर्ग में 84.6 प्रतिशत लाभ, ब वर्ग में 100 प्रतिशत लाभ, द वर्ग में 100 प्रतिशत लाभ रहा।

अचिन्त्यशक्ति रस की कम मात्रा अधिक दिन तक देना ज्यादा प्रभावी रहा । इसका मात्रा निर्धारण जान्तव प्रयोग द्वारा करना चहिये ।

काय चिकित्सा–84

मूत्रवह स्रोतोगत अश्मरी पर वृक्कशूलान्तक वटी का प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. गिरीश कुमार तिवारी
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1989 ; 187

अश्मरी पर औषध प्रयोग का अध्ययन ही महानिबंध का उद्‌देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक तथा K.U.B. क्षेत्र के I.V.P. एक्स–रे से अश्मरी निदान किया गया, साथ में लक्षणतः हृदयगति, श्वासगति, मूत्रसंख्या, मलसंख्यातः भी रोग निदान किया गया, कुल 18 आतुर लिये गये ।

वृक्कशूलान्तक वटी 800 मि.ग्रा. 2–2 गोली दिन में 2 बार तृणपंचमूल क्वाथ 20–20 मि.लि. 2 बार के साथ दी गयी । पथ्य के रूप में मूंग, मसूर की छिलका दाल व लौकी का शाक दिया गया । औषध प्रयोग 75 दिन तक किया गया ।

18 रोगियों में से 8 रोगियों में X-Ray द्वारा अश्मरी प्रयोग के बाद नहीं पायी गयी, 65 प्रतिशत लक्षणोपशमन भी हुआ । शेष 10 रोगियों में लाभ नहीं हुआ ।

काय चिकित्सा–85

विचर्चिका में महाखदिर घृत की कार्मुकता

अध्येता	:	डा. अशोक कुमार
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1989 ; 186

''खदिरस्तु कुष्ठघ्नानां'' का प्रायोगिक अध्ययन एवं विचर्चिका में प्रयोग ही महनिबंध का उद्देश्य है ।

इतिवृत्त के आधार पर 10 रोगी चयनित कर 2 वर्ग बनाये गये ।

''अ'' वर्ग में स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन एवं संसर्जन पूर्वक महाखदिर घृत 25–25 ग्राम दिन में 2 बार 6 सप्ताह तक दिया गया ।

''ब'' वर्ग में शोधन के बिना ही औषध प्रयोग किया गया ।

''अ'' वर्ग में 48.86 प्रतिशत रोगियों में लाभ व 42.86 प्रतिशत में मध्यम लाभ हुआ ।

''ब'' वर्ग में 66.67 प्रतिशत लाभ तथा मध्यम लाभ 33.33 प्रतिशत रोगियों में हुआ ।

विचर्चिका में शोधन की अपेक्षा अशोधन पूर्वक औषध प्रयोग का आश्चर्यजनक रूप से अधिक लाभ पाया गया ।

काय चिकित्सा–86

हृद्रोग में हृदयार्णव रस एवं हरीतक्यादि चूर्ण का मूल्यांकन

अध्येता	:	डा. दिनेश कटौच
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
सह–निर्देशक	:	प्रो. सुशील कुमार शर्मा
वर्ष	:	1990 ; 235+10

विश्व स्वास्थ्य संगठन के उद्देश्य की पूर्ति में आयुर्वेद के योगदान हेतु हृदय रोग वर्ग में धमनी विकृति जन्य हृद्रोग (Ischaemic heart disease) को शोध विषय के रूप में चयनित किया है।

आतुरवृत्त पत्रक व आधुनिक परीक्षणों द्वारा 45 रुग्णों का चयन कर 15–15 रोगियों के 3 वर्ग बनाये गये ।

1. आयुर्वेदिक वर्ग में हृदयार्णव रस (र.सा.सं.) 250 मि.ग्रा. 2 गोली व हरीतक्यादि चूर्ण (भा.प्र.) 500 मि.ग्रा. की 4 गोली, दिन में 4 बार भोजन से 30–45 मिनट बाद कोष्ण जल से दिया ।
2. मिश्रित वर्ग में उक्त औषध के साथ Vaso dilator + Calcium antagonist or Beta blocker + Anti platelet drugs के साथ 45 दिन तक प्रयोग किया।
3. नियामक वर्ग में केवल उक्त आधुनिक औषधियां 45 दिन तक दी गयी ।

15–15 दिन बाद प्रगति निरीक्षण किया गया । आयुर्वेदिक वर्ग में 7 रोगियों को पूर्ण लाभ, 6 को मध्यम लाभ व 2 को अल्पलाभ रहा ।

मिश्रित वर्ग में 10 को पूर्ण लाभ, 3 को मध्यम लाभ व 2 को अलाभ रहा ।

नियन्त्रक वर्ग में 5 को पूर्ण लाभ, 6 को मध्यम लाभ व 4 को अलाभ रहा ।

आधुनिक वर्ग की अपेक्षा आयुर्वेदिक औषधि सेवन वर्ग में लाभ अपेक्षाकृत अधिक रहा, जबकि मिश्रित औषध सेवन वर्ग का लाभ सर्वाधिक रहा है।

काय चिकित्सा–87

वाजीकरणान्तर्गत शतावर्यादि चूर्ण की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता	:	डा. बृजराज बिहारी भारद्वाज
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1990 ; 211+10

वाजीकरण त्रिविध एषणाओं व पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति का साधन होने से तथा शतावर्यादि चूर्ण (योग रत्नाकर) अल्पव्ययसाध्य व सर्वसुलभ होने से चयनित किया गया ।

आतुरवृत्त पत्रक जिसमें मुख्य रूप से शुक्र परीक्षण शुक्र की मात्रा, शुक्राणु संख्या, सामान्य गति सम्बन्धित प्रश्न थे, के आधार पर 13 रुग्णों (वर्ग क) तथा 7 सामान्य व्यक्तियों (वर्ग ख) को लेकर शतावर्यादि चूर्ण (योग रत्नाकर) 3 से 5 ग्राम की मात्रा में प्रातः सायं दूध से 30 दिन तक दिया गया ।

आतुर वर्ग क में लाक्षणिक प्रशमन आधार पर लाभ का प्रतिशत 81.30 रहा । शुक्र परीक्षण परिणामों में वर्ग क के 13 आतुरों में 61.54 प्रतिशत को पूर्ण लाभ, 15.38 प्रतिशत आतुरों को मध्यम लाभ तथा 23.08 प्रतिशत आतुरों को अल्प लाभ हुआ ।

वर्ग ख में अधीत 7 व्यक्तियों में 57.14 प्रतिशत को पूर्ण लाभ तथा 42.86 प्रतिशत को मध्यम लाभ तथा शुक्र परीक्षण परिणामों में 7 व्यक्तियों में से 71.43 प्रतिशत को पूर्ण लाभ तथा 28.57 प्रतिशत व्यक्तियों को मध्यम लाभ हुआ ।

काय चिकित्सा–88

आवृत व्यानोदान वायु (उच्च रक्तचाप) पर रसोन गुग्गुलु का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. सविता मलिक
निर्देशक	:	प्रो. मदनगोपाल शर्मा
वर्ष	:	1990 ; 221

उच्च रक्त चाप आधुनिक युग की गम्भीर समस्या होने व सर्वसुलभ एवं अल्पव्यय साध्य औषधि रसोन गुग्गुलु (रस तन्त्रसार सिद्धप्रयोग संग्रह) का प्रायोगिक अध्ययन करने की जिज्ञासा ही अध्येत्री के इस विषय चयन का हेतु था ।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार उच्च रक्त चाप के 30 रुग्णों का चयन कर दो वर्ग बनाए गए – प्रथम वर्ग में 18 उन रुग्णों को लिया गया जिनका रक्तचाप 90 से 100 mmHg तथा द्वितीय वर्ग में 12 ऐसे रुग्ण रखे गये जिनका रक्तचाप 101 से 110 mmHg तक था, दोनों वर्गों के 30 रुग्णों को रसोन गुग्गुलु 2–2 वटी (900 मि.ग्रा.) प्रतिदिन 3 बार उष्ण जल से 45 दिन तक दी गई ।

30 रुग्णों में से 18 को पूर्ण लाभ (सामान्य रक्तचाप व लक्षणोपशमन), 10 को पर्याप्त लाभ (लक्षणों की तीव्रता व 50 से 75 प्रतिशत तक लाभ) व 2 को अल्प लाभ (लक्षणों की तीव्रता व 24 से 49 प्रतिशत तक लाभ हुआ) ।

काय चिकित्सा–89

अम्लपित्त में शतावरी घृत की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता	:	डा. अनिता शर्मा
निर्देशक	:	वैद्य बनवारी लाल मिश्रा
सह–निर्देशक	:	डा. राधेश्याम शर्मा
वर्ष	:	1990 ; 182

अम्लपित्त रोग पर अनुसंधान करने की जिज्ञासा ही महानिबंध का विषय चयन हेतु है ।

आतुरवृत्त पत्रक द्वारा 30 आतुरों का चयन किया गया । 10 आतुरों की आमाशयिक रस परीक्षा भी की गयी, साथ ही बेरियम मील एक्स–रे तथा रक्त परीक्षण कराये गये।

भोजन के मध्य में शतावरीघृत (भै.र.) 10–10 मि.लि. प्रातः सायं दूध से 45 दिन तक दिया गया ।

10 आतुरों में से 6 आतुरों में स्वतंत्र लवणाम्ल प्राकृतावस्था से कम तथा 1 आतुर में अधिक पाया गया, किन्तु सभी आतुरों में कुल अम्लीयता अधिक थी ।

औषधि का औसत लाभ 59 प्रतिशत रहा ।

काय चिकित्सा–90

अर्शोरोग में बाहुशाल गुड़ की कार्मुकता

अध्येता	:	डा. प्रतिभा
निर्देशक	:	वैद्य बनवारी लाल मिश्रा
सह–निर्देशक	:	डा. दयाशंकर मिश्रा
वर्ष	:	1990 ; 192

अर्शोरोग की सरलतम चिकित्सा हेतु बाहुशाल गुड़ (चक्रदत्त) का प्रायोगिक अध्ययन हेतु विषय चयनित किया गया ।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार 30 रोगियों का चयन कर बाहुशाल गुड़ (चक्रदत्त) 10–10 ग्राम की मात्रा में दिन में 2 बार दूध से 1 माह तक दिया गया ।

पथ्य में विशेषतः तक्र सेवन, गेहूं की रोटी, हरी सब्जी, सुबह शाम भ्रमण कराया गया।

प्रति 10 दिन बाद प्रगति निरीक्षण अंकन किया । 17 रोगियों को उत्तम लाभ, 9 में मध्यम लाभ, 2 को आंशिक लाभ तथा 2 को कोई लाभ नहीं रहा ।